विद्या विनय विवेक
EICHER SCHOOL

हृदयांगिनी

हिंदी पत्रिका- 2025-26

नैनांश खत्री, ग्यारहवीं बी

आयशर विद्यालय फरीदाबाद
गुडअर्थ फ़ाउंडेशन स्कूल

प्रधानाचार्य की कलम से...

विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को मेरा सादर प्रणाम!

आज मैं अपने विद्यालय के समग्र विकास और बच्चों की खुशियों को देखकर अत्यंत हर्षित हूँ। हमने एक समावेशी पाठ्यक्रम अपनाया है, जिसमें बच्चों का शैक्षिक, शारीरिक और मानसिक विकास प्रमुख है।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हमने बच्चों को न केवल पढ़ाई के प्रति प्रोत्साहित किया है, बल्कि खेल-कूद और अन्य गतिविधियों में भी उनकी प्रतिभा को निखारने का प्रयास किया है।

मैं अभिभावकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने हमारे प्रयासों में हमेशा साथ दिया है। उनकी खुशियाँ और समर्थन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बढ़ी है। यह देखकर हम गर्व महसूस करते हैं कि बच्चे अब छुट्टी लेने के नाम पर कतराते हैं। यह बदलाव हमारे समर्पण और प्रयासों का ही फल है।

विद्यालय में सुरक्षा और अनुशासन को लेकर हमने विशेष प्रयास किए हैं और मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इसमें हम सफल हुए हैं। समाज के विभिन्न अंगों को एकीकृत कर विद्यालय का हिस्सा बनाने का जो प्रयास किया गया है, उसकी भी सराहना करता हूँ।

बच्चे जैसे-जैसे बड़े हो रहे हैं, उनकी आदतों पर नियंत्रण विकसित हो रहा है, विशेषकर ऐसी आदतें जो उनके लिए हानिकारक हैं। इस पर हम संतुष्ट हैं और उम्मीद करते हैं कि आने वाले दिनों में यही प्रयास उन्हें जीवन की सफलता की सीढ़ियों तक चढ़ने में महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे। चाहें अध्यापक हों, प्रधानाचार्य हों, अभिभावक हों या विद्यार्थी गण, विद्यालय ही वह स्थान होना चाहिए, जहाँ सर्वांगीण विकास का अवसर प्राप्त हो।
शुभकामनाओं के साथ,

गुनेंद्र कुमार मिश्रा

मन की बात - (कविता अंश)

हर्षिता कालरा
आठवीं ए

जल ही जीवन

जल ही है जीवन का आधार,
इसे न यूँ बहाओ बेकार।
जल से हैं सब जीवन पाते,
इसके बिन हम जीवित न रह पाते।
जल से है हमारे जीवन में जान,
जिसके बिना ये दुनिया है वीरान।

जल के बिना न नदियाँ न उपवन,
इसके बिना नहीं मिलेगा अन्न।
यही है अमृत, जल है प्राण,
जल के बिना न जीवन,
न कोई पहचान।

हिताशी
आठवीं ए

आकाश

आओ सुनाएँ आकाश की कहानी।
हर दिन नई, हर दिन सुहानी।
कभी इसमें बादल, कभी बरसे पानी।
हर रूप में लगती है, ये मस्तानी।
ऊँचाई इसकी बड़ी विशाल।
दिन में नीला और शाम में लाल।
रात में तारे जब टिमटिमाते।
चाँद भी शीतल रोशनी लुटाता।
सुबह-सवेरे सूरज चमकता,
नई किरणों से सबको जगाता।
आकाश में उड़ते हैं पक्षी और विमान
चलो दोस्तों, भरे हम भी एक ऊँची उड़ान।

अवंती गौर
चौथी बी

सम्मान

सम्मान है रिश्तों की डोर,
दिलों को जोड़ती है यह डोर।

बड़ों का सम्मान हमें सिखाता,
जीवन में ऊँचाई दिलाता।

छोटों को जब प्यार मिलेगा,
उनका मन भी खिल उठेगा।

सम्मान से बढ़ती है पहचान,
बनता है समाज महान।

बिन सम्मान सब खो जाता,
सपनों का आकाश ढह जाता।

आओ हम सब ये वचन निभाएँ,
सम्मान से जीवन को सजाएँ।

वर्नन बुट्टा
चौथी डी

स्कूल के दिन

स्कूल के दिन, कितने प्यारे,
दोस्त मिले सब दिल के न्यारे।

पढ़ाई होती, खेल भी होते,
मिलकर हम सब आगे बढ़ते।

शिक्षक सिखाते ज्ञान की बातें,
प्यार भरी हैं उनकी सौगातें।

घंटी बजती, छुट्टी होती।
मस्ती में दौड़कर मैं घर को आती।

स्कूल के दिन हैं सबसे अच्छे,
याद करेंगे सदा ही बच्चे।

वान्या सहाई
पाँचवीं डी

मेरे पापा

मेरे पापा सबसे प्यारे,
दिल के सच्चे, बड़े दुलारे।
सुबह-सुबह जब ऑफ़िस जाते,
मुस्कुराकर सबको जगाते।

लौटें जब वे शाम ढले,
खुशियों के मोती साथ लिए।
कंधों पर बिठाकर घुमाते,
चॉकलेट लाकर मुझे खिलाते।

होमवर्क में करते मदद,
गलती पर भी देते सबक।
उनकी डाँट प्यार भरी,
मैं हूँ उनकी नन्हीं परी।

मेरे हीरो, मेरे सहारे,
पापा मेरे जग से न्यारे।
ईश्वर से बस यही दुआ,
सदा बने रहें मेरे पिता।

कायरा जॉली
चौथी डी

माँ

अपने सपनों को त्यागकर,
जिसने हमेशा मेरा साथ दिया,
मेरी खुशियों के आगे न किसी को आने दिया,
वह और कोई नहीं, मेरी माँ ही है,
जिसने मुझे इस धरती पर जन्म दिया।
कहानी सुना-सुनाकर मुझे ऐसी सीख दी,
कभी किसी का बुरा न करने की शिक्षा दी।
धरती पर बहुत से लोग मिले हमें,
पर माँ जैसी ममता किसी ने न दी।
मेरी छोटी-छोटी चीज़ों का ध्यान रखना,
कुछ न कहने पर भी समझ जाना,
हर वक्त मेरे आस-पास ही रहना,
जिसकी दुनिया मुझसे और मेरी उनसे,
वह और कोई नहीं, माँ है मेरी।
भूली हुई चीज़ों को याद दिलाना,
हर काम वक्त पर करना सिखाना,
कोई भूल हो जाए
तो मुस्कुरा कर माफ़ करना,
ऐसी ही तो अनमोल है मेरी माँ।
साया बनकर साथ निभाना,
चोट लगे तो दवा लगाना,
पीड़ा अपने ऊपर ले लेना,
माँ का नाम हमेशा सबसे पहले लेना।

जिया कंसरा
नौवीं सी

तुम बिन सब सून

माँ तुम्हारा प्यार है सबसे मीठा।
हर दिन लगता है तुम्हारे बिन फ़ीका।
तुम्हारे स्नेह से खिल उठता घर-संसार,
तुम बिन सब जग है बेकार।
तुमसे होता पूरा मेरा संसार,
तुम ही हो मेरे जीवन का आधार।
कभी डाँटती, तो कभी समझाती हो तुम,
फिर भी अपनी लगती हो तुम।
दुनिया की बुराइयों से बचाती हो तुम,
अच्छे-बुरे का फ़र्क समझाती हो तुम।
मीठे-मीठे सपनों की रानी हो तुम,
उन सपनों को सच करती हो तुम।
तेरी गोदी है सबसे प्यारी,
जिसमें मिलती खुशियाँ सारी।
भगवान का सच्चा रूप है माँ,
सबसे सुंदर है मेरी माँ।

शिविका बाली
पाँचवीं डी

जिसकी ममता है सबसे न्यारी

माँ तेरी ममता है सबसे न्यारी,
लगती हो तुम मुझको सबसे प्यारी।
प्यार तुम्हारा सागर समान,
स्नेह भरी है तेरी मुस्कान।

बिन कहे तुम सब समझ जाती,
बिन माँगे हर चीज़ दिलाती।
दूर करती मेरी सारी बीमारी,
जादू की छड़ी है दुआ तुम्हारी।

मेरी खातिर सौ सपने सजाती,
अपने अरमानों का त्याग कर जाती।
बिन तेरे सूनी है जीवन की क्यारी,
तू ही मेरी हरी-भरी फुलवारी।

नित्या नेगी
चौथी सी

मेरा घर

मेरा घर है सबसे प्यारा,
सबसे सुंदर, सबसे न्यारा।
माँ का खाना, खुशबू वाला,
हर पल रखती वह ध्यान हमारा।

माँ की ममता का न कोई मोल,
कोई नहीं कर सकता उसका तोल।
पापा हैं शान हमारी,
उनसे है दुनिया सारी।

दादी की सीख होती लाज़वाब,
उनसे बढ़ता आत्मविश्वास।
सबका आदर बहुत ज़रूरी,
इससे कम होती है दूरी।

भाई-बहन के साथ सैर-सपाटा,
सुंदर यादें, मज़बूत रिश्तों का धागा।
हर कोई हमसे प्यार जताता,
प्यारा बचपन यही तो कहलाता।

करुण्या
छठी डी

परनिका गर्ग
सातवीं डी

समर कैंप

समर कैम्प तो बहाना था,
गर्मियों की छुट्टियों को मज़ेदार बनाना था।

बच्चों ने अंतरिक्ष में जाने का ठाना था,
इसीलिए तो कुछ रहस्यों से परदा उठाना था।

बच्चों की कल्पनाओं को सच कर दिखाना था,
लेकिन इसके लिए एक शिक्षक के पास जाना था।

अंतरिक्ष को कहानियों का वास्तविक रूप दिखाना था,
शिक्षिका ने तो कक्षा में ही पूरा अंतरिक्ष उतारा था।

नई बातें, नए किस्सों से रोज़ बच्चों को रूबरू कराना था,
इसलिए तो मैडम ने चित्रकला को अपना हथियार बनाया था।

जैसे सारे ग्रहों ने सूरज को केंद्र बिंदु माना है,
वैसे बच्चों ने भी मैडम को ही अपना कप्तान माना था।

गर्मी की छुट्टियाँ सीख और मस्ती से भर गईं,
समर कैम्प की यादें बच्चों के दिलों में बस गईं।

हिताशी सिंघला
चौथी डी

हमारी धरती

हरी-भरी धरती हमारी,
कहते उसे हम माता हमारी।
पेड़-पौधे, जल और जंगल,
रत्न जो देते साथ हर दम।

फूल, पत्तियों से ये सजती ,
प्रकृति के सौंदर्य से ये सँवरती।
शीतल पवन यहाँ जो आए,
हमारे जीवन को सुखद बनाए।

आओ मिलकर हाथ मिलाएँ,
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।
सूर्य, चन्द्रमा तेज़ जो लाएँ,
संपूर्ण जग को ये चमकाएँ।

पेड़ की डाली पर चिड़ियाँ गाएँ,
फूलों की सुगंध से धरती महक जाए।
आकाश के मेघ जब बरस जाएँ,
मोर झूमकर नाचें गाएँ।

हरी-भरी हो धरती हमारी,
सबसे सुंदर सबसे प्यारी।

हिताशी
आठवीं ए

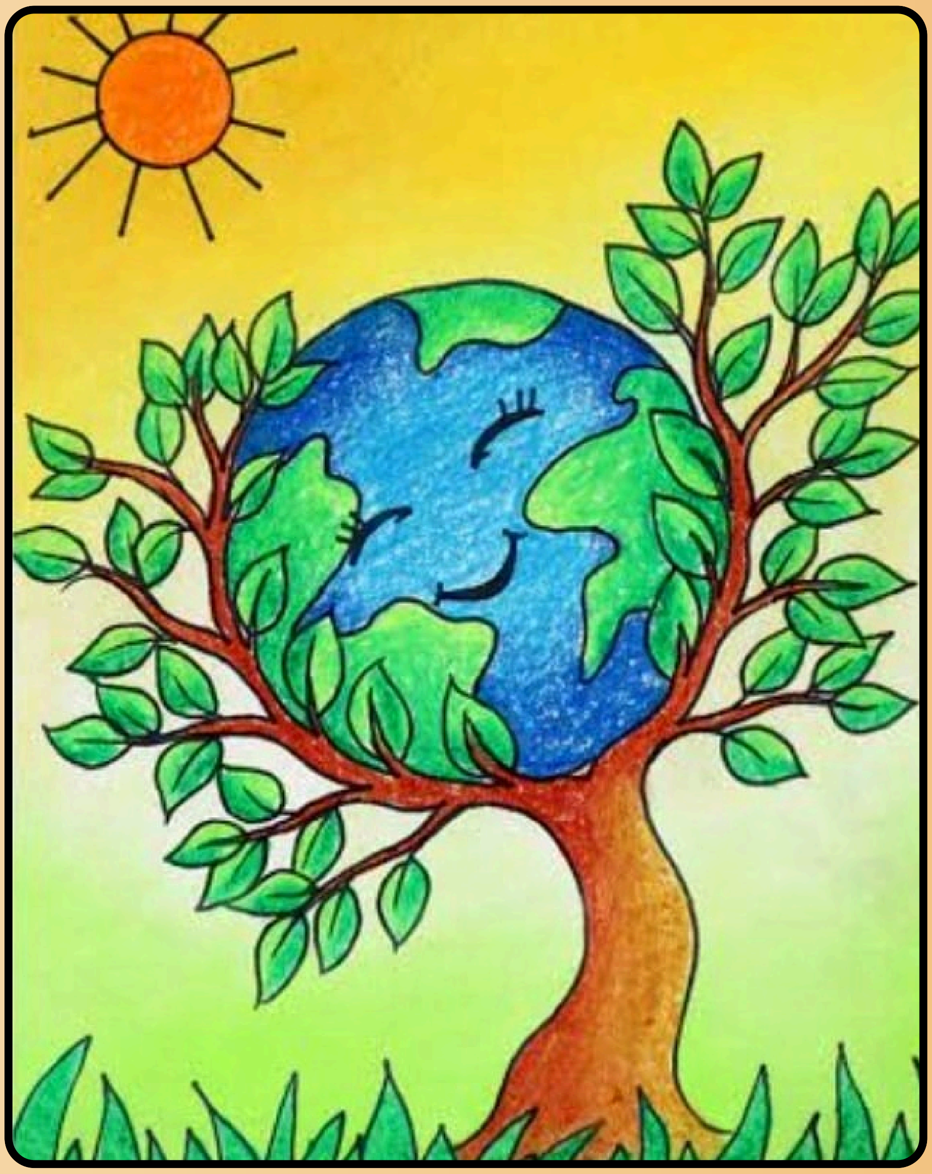

बच्चों की चित्रात्मक प्रस्तुति

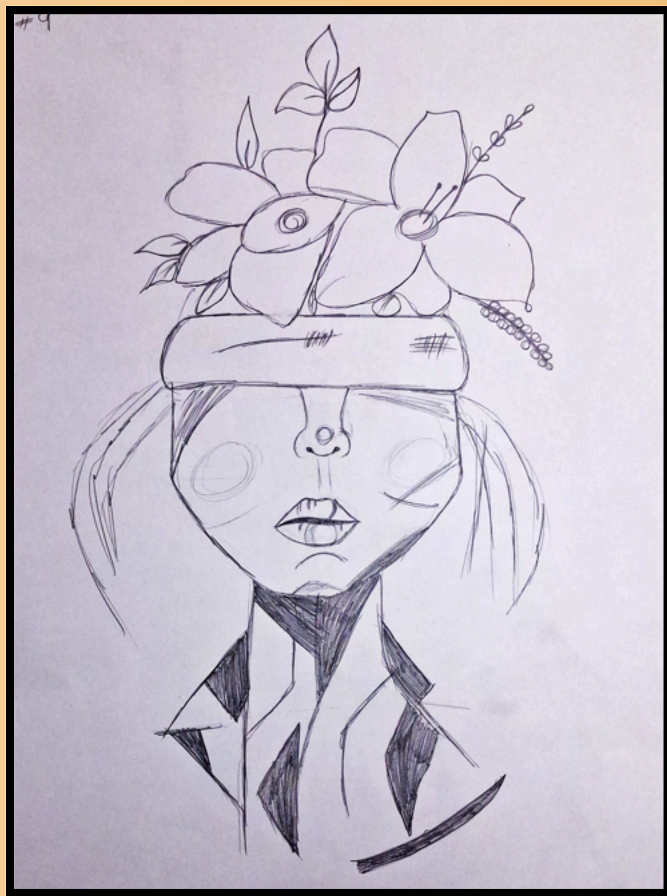

रिया अरोरा
बारहवीं सी

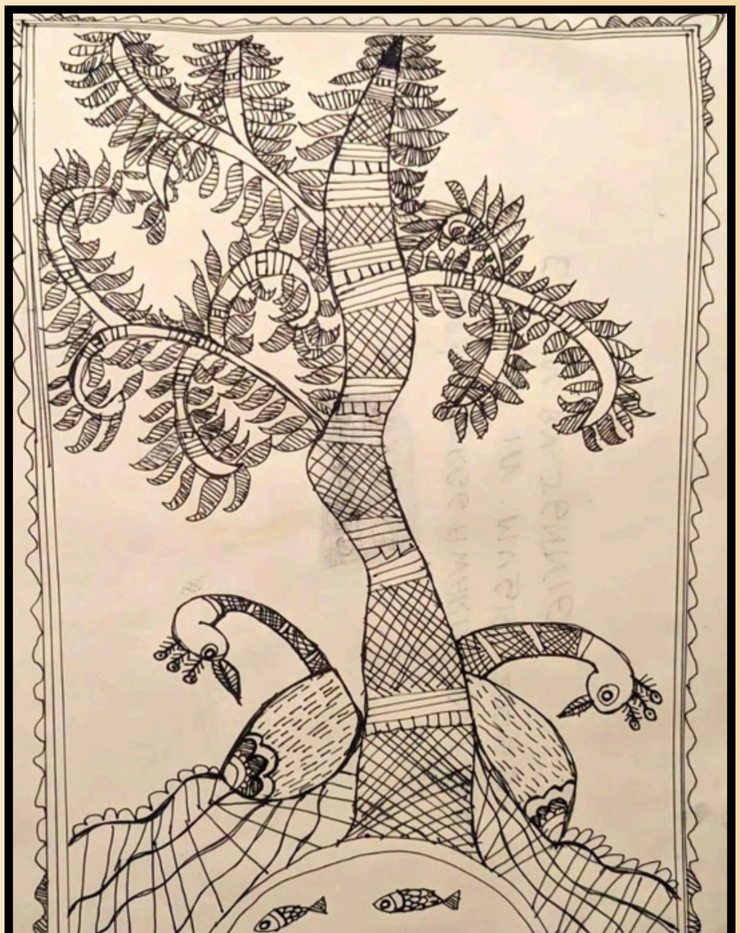

नेमांशी ग्रोवर
छठी ए

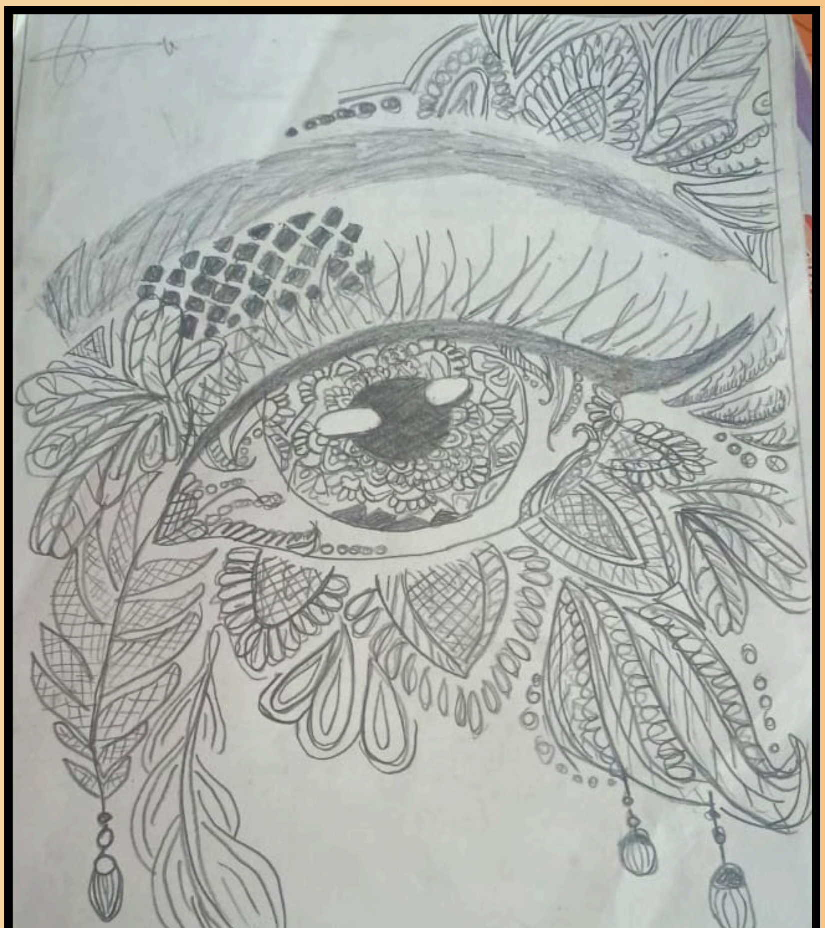

श्रेयांश शर्मा
आठवीं सी

एलियोना
बारहवीं ए

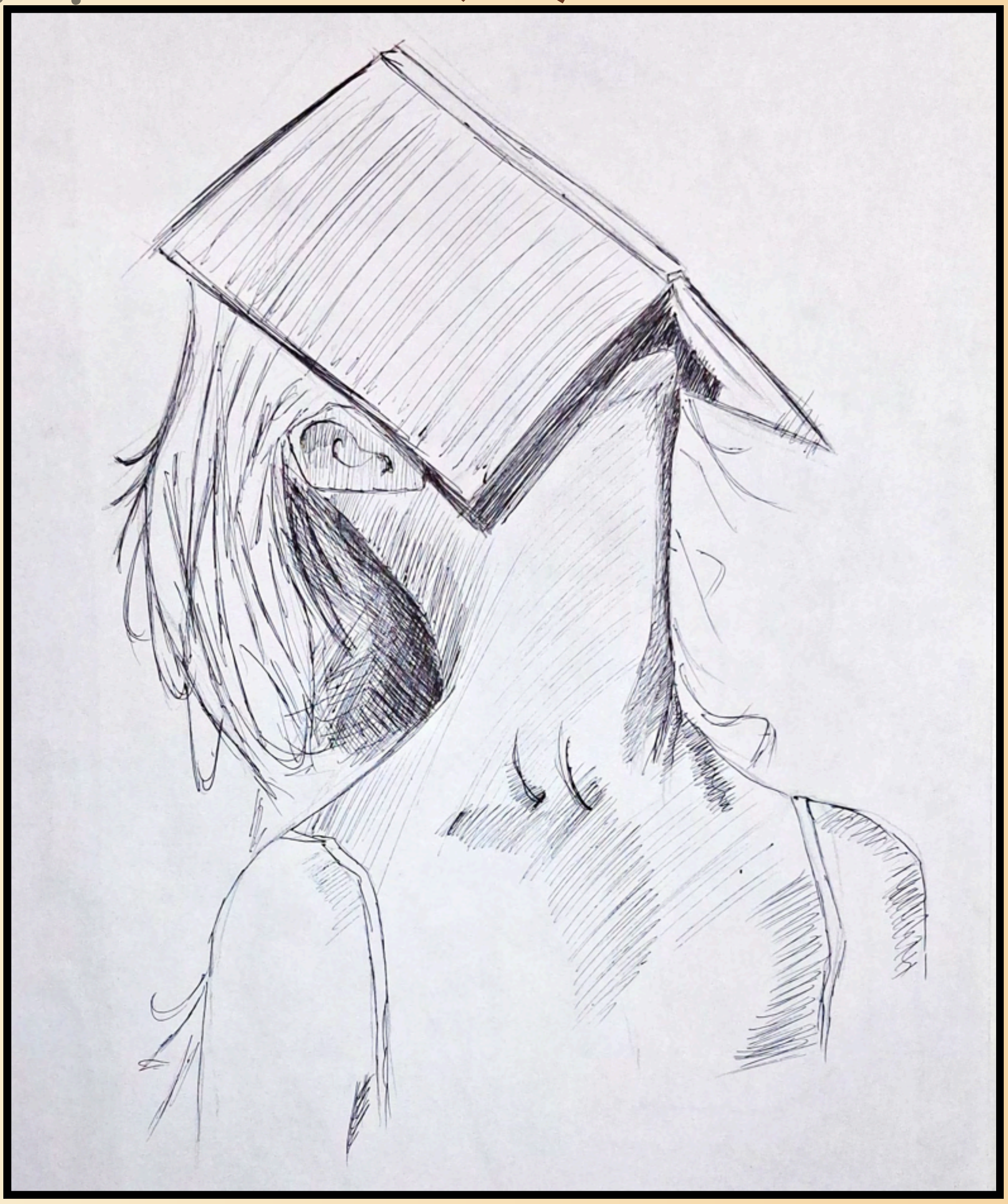

कृषिता कोहली
बारहवीं डी

नमांशी ग्रोवर
छठी ए

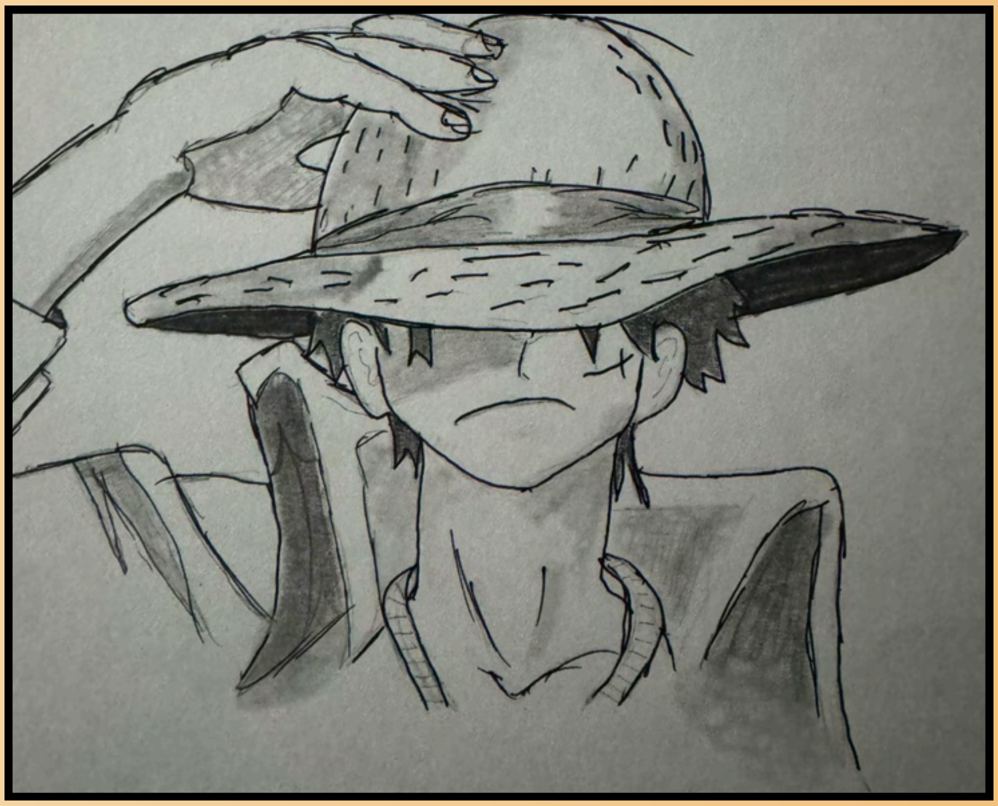

ओम सोनी
सातवीं बी

हार्दिक शर्मा
आठवीं ए

कृतिका शर्मा
आठवीं डी

अरिहंत
पाँचवीं सी

परनिका गर्ग
सातवीं डी

समृद्ध सिंह
छठी ए

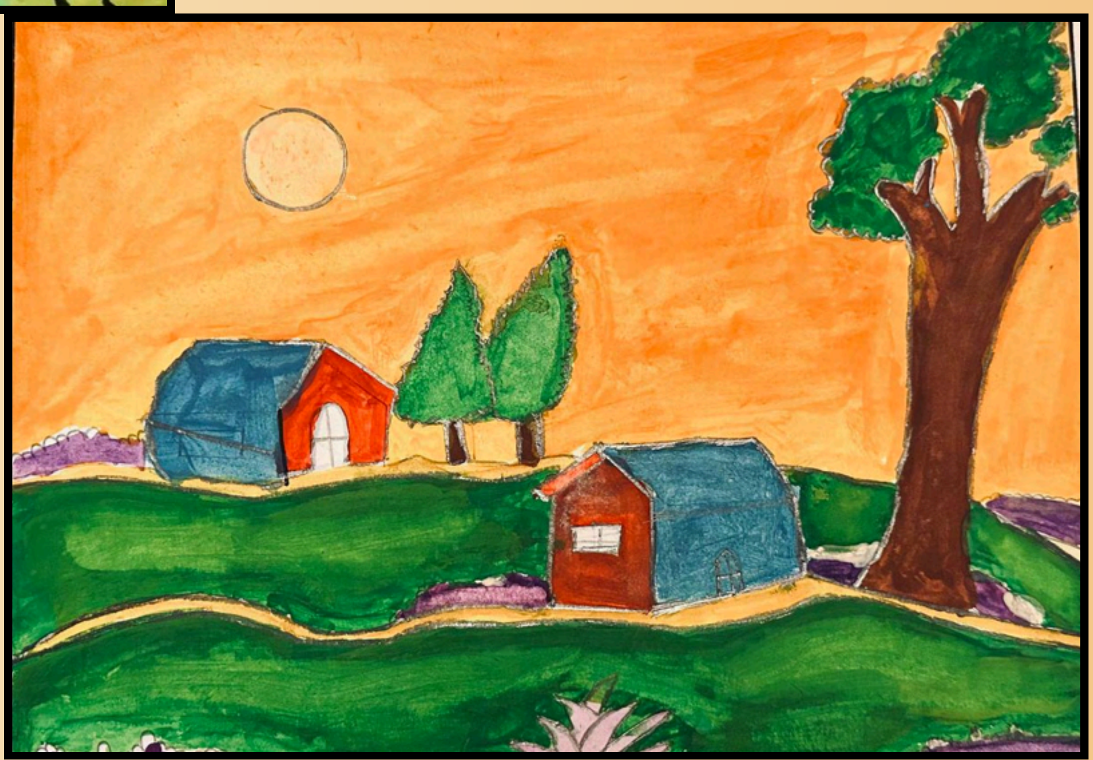

कल्पना की उड़ान (कहानी लेखन)

रिया अरोरा
बारहवीं सी

एक छोटी-सी गलती जो जीवन बदल देती है

मैं और मेरी सबसे अच्छी दोस्त बचपन से ही साथ पढ़ते आ रहे थे। हम दोनों हर काम में एक-दूसरे की मदद करते थे — चाहे होमवर्क हो या किसी प्रतियोगिता की तैयारी, हमारी जोड़ी पूरे स्कूल में मशहूर थी।

एक दिन स्कूल में एक बहुत ज़रूरी प्रोजेक्ट जमा करने की तारीख तय हुई। सब बच्चे उत्साह से काम कर रहे थे। मेरी दोस्त ने भी पूरा प्रोजेक्ट बहुत मेहनत से बनाया था, लेकिन एक छोटी-सी गलती कर बैठी — वह तारीख नोट करना भूल गई!

जब वह प्रोजेक्ट लेकर स्कूल पहुँची, तब तक जमा करने की तारीख निकल चुकी थी। शिक्षिका ने सख़्ती से कहा, "अब देर हो चुकी है।" उसे बहुत दुख हुआ, उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे डर था कि अब वह परीक्षा में फ़ेल हो जाएगी।

मैंने उसे समझाया, "गलती हर किसी से होती है, लेकिन असली हिम्मत गलती सुधारने में है।" फिर मैंने उसके साथ मिलकर नया प्रोजेक्ट बनाने में मदद की। हमने रात-दिन मेहनत की और अगली बार समय पर प्रोजेक्ट जमा कर दिया।

शिक्षिका ने उसकी मेहनत देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "इस बार तुम्हारा काम सबसे अच्छा है!" मेरी दोस्त बहुत खुश हुई और उसने वादा किया कि अब वह कभी भी काम टालने की गलती नहीं करेगी।

शिक्षा:
इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि जीवन में समय का सही प्रबंधन बहुत ज़रूरी है। अगर हमसे कोई गलती हो भी जाए, तो उसे डरने के बजाय सुधारने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि हर गलती हमें कुछ नया सिखाती है।

समायरा कंबोज
पाँचवी सी

पंछी की आज़ादी की कहानी

एक गाँव में एक लड़के ने एक सुंदर मैना पिंजरे में पाल रखी थी। मैना बहुत प्यारी थी, लेकिन वह हमेशा उदास रहती थी। जब भी वह बाहर उड़ते हुए पक्षियों को देखती, उसके मन में आज़ादी की चाह बढ़ जाती।

लड़का रोज़ उसे दाने डालता, पानी देता और उससे बातें करता, फिर भी मैना खुश नहीं होती। एक दिन उसकी दादी ने कहा, "बेटा, पक्षियों की असली खुशी उड़ने में है। पिंजरे में तो वे कैदी जैसे हो जाते हैं।"

लड़के को दादी की बात समझ आ गई। उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। पहले तो मैना थोड़ी देर चुपचाप खड़ी रही, फिर धीरे से उड़ गई और पास के पेड़ पर बैठकर मधुर आवाज़ में गाने लगी।

लड़का उसे देखकर मुस्कुराया। मैना रोज़ वापस आती, दाने खाती और फिर उड़ जाती। अब दोनों सच्चे दोस्त बन गए थे।

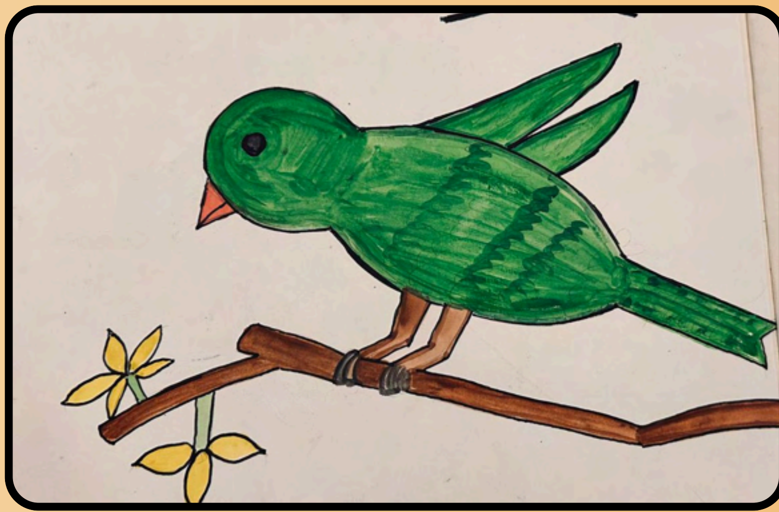

समृद्ध सिंह
छठी ए

आशिता चौधरी
छठी ए

ज़ुहैर खान
सातवीं डी

शिक्षा का महत्त्व

राहुल और रमन दो अच्छे दोस्त थे। दोनों को क्रिकेट का बहुत शौक था। उनका सपना था कि एक दिन वे बड़े क्रिकेटर बनें।

राहुल को क्रिकेट इतना पसंद था कि उसने पढ़ाई पर ध्यान देना छोड़ दिया। वह पूरा समय क्रिकेट खेलने में लगाता और पढ़ाई को नज़रअंदाज़ करता। दूसरी ओर रमन कक्षा का श्रेष्ठ विद्यार्थी था। वह पूरी लगन से पढ़ाई करता और साथ ही क्रिकेट का अभ्यास भी करता। उसने पढ़ाई और खेल, दोनों में संतुलन बनाए रखा।

समय बीत गया। क्रिकेट चयन का दिन आया। राहुल और रमन दोनों का चयन हो गया, लेकिन जिस ऊँचाई तक पहुँचना चाहते थे, वहाँ नहीं पहुँच पाए। ज़िंदगी आगे बढ़ी।

पढ़ाई में अच्छा होने के कारण रमन को एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई। उसे हर जगह सम्मान मिला, लेकिन राहुल, जिसने पढ़ाई छोड़ दी थी, कुछ खास हासिल नहीं कर सका।

शिक्षा:

इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि खेलों के साथ-साथ पढ़ाई भी ज़रूरी है। पढ़ाई जीवन को सहारा और सुरक्षा देती है।

आशमन गर्ग
सातवीं डी

बौध्दिक चिंतन (लेख)

नैनांश खत्री
ग्यारहवीं बी

सान्वी गुप्ता
छठी ए

ऑनलाइन शॉपिंग

उँगलियों के एक इशारे पर, सामान घर आ जाता है,
पर जो बाज़ार का रिश्ता था, वह कहीं खो जाता है।
सस्ते के मोहजाल में, हम ऐसे फँसते जाते हैं,
देखकर चमक स्क्रीन की, असलियत भूल जाते हैं।

दुकानें जो थी मोहल्ले की, अब सूनी-सूनी रहती हैं,
वे बूढ़ी आँखें उम्मीद में, अब जाने क्या-क्या कहती हैं।
वहाँ उधार भी चलता था और दुआएँ भी मिलती थीं,
वे छोटी-छोटी खुशियाँ भी, बाज़ारों में खिलती थीं।

डिब्बों में बंद होकर अब, हर त्योहार आता है,
इंसान से इंसान का, अब मिलना कम हो जाता है।
सुविधा चुनना ठीक है, पर होश ज़रा तुम रखना,
सिर्फ़ सेल के चक्कर में, अपनों से दूर न होना।

खरीददारी ऑनलाइन करो,ज़रा विवेक भी जगाओ,
कुछ दीप उन हाथों से भी लो, जिन्हें तुम जानते हो।
तरक्की वही सच्ची है, जो सबका साथ निभाती है,
वरना अकेलेपन की सेल, बस सन्नाटा ले आती है।

रचना बिधूड़ी
हिंदी अध्यापिका

एक दिन बिना इंटरनेट के

एक दिन बिना इंटरनेट के,
कुछ यूँ गुज़ारा मैंने,
बस्ते और अलमारी का,
एक-एक कोना सँवारा मैंने।
लिखना था एक अनुच्छेद
और सवाल हल करने थे भाई!
चैट जीपीटी नहीं चला तो
पुस्तकों की याद आई।
माँ भी थीं हैरान देखकर,
इसको आज हुआ क्या?
पुस्तक से हो रही पढ़ाई,
मोबाइल खराब हुआ क्या?
पास आकर बड़े प्यार से,
दीदी ने पूछा मुझसे।
हुआ अचंभा कैसा ये,
सूरज निकला क्या पश्चिम से?
माँ और दीदी को मैंने,
दोनों को समझाया।
इंटरनेट है बंद तभी तो,
पुस्तकों को खोजा-पाया।
पर अब मुझको समझ आ गई,
जीवन की सारी कहानी।
इंटरनेट दे जाए धोखा,
लेकिन पुस्तकें हैं मीत पुरानी।
इसलिए अब मोबाइल और
चैट जीपीटी के भरोसे न रहूँगा।
पुस्तकों से करके मित्रता,
उनसे ही पढ़ूँगा।

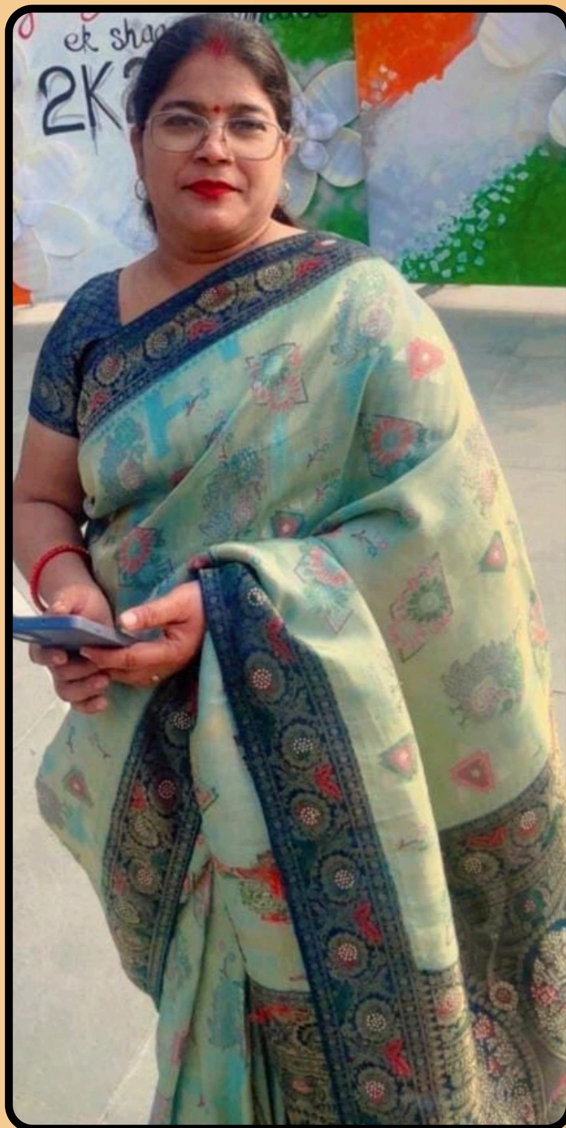

सीमा रानी
हिंदी अध्यापिका

जो भी है, बस यही एक पल है

ज़िंदगी अक्सर हमें भविष्य की चिंताओं और अतीत की यादों के बीच उलझाए रखती है। हम या तो बीते कल की गलतियों के बारे में सोचते रहते हैं या आने वाले कल की योजनाओं में खोए रहते हैं। ऐसे में जो सबसे कीमती चीज़ हमारे पास होती है, वह अनदेखी रह जाती है—वर्तमान का यह पल। सच तो यह है कि जो भी है, बस यही एक पल है।

यह पल न तो बीते कल जैसा है, न ही पूरी तरह आने वाले कल के जैसा होगा। यह सिर्फ़ अभी के लिए है। हम सोचते हैं कि जब सब ठीक हो जाएगा, तब खुश होंगे; जब मंज़िल मिल जाएगी, तब जिएँगे, लेकिन क्या गारंटी है कि वह पल कभी आएगा? ज़िंदगी ने हमें यही सिखाया है कि जो समय हमारे हाथ में है, वह केवल वर्तमान है।

अगर हम इस क्षण को पूरी तरह महसूस करें तो शायद हमें बहुत कुछ अलग करने की ज़रूरत ही न पड़े। खुशी बाहर नहीं, इसी पल के भीतर छिपी होती है। यह पल हमसे चाहता है कि हम खुद को, अपनी स्थिति को और इस समय को स्वीकार करें। जब हम यह कर पाते हैं, तो भीतर एक शांति जन्म लेती है।

जो भी है, बस यही एक पल है। हर मुस्कान, हर आँसू, हर अनुभव इसी पल में अर्थ रखता है, अगर हम इसे सच में जी लें, तो शायद पूरी ज़िंदगी अपने-आप संपूर्ण लगने लगेगी।

अंततः ज़िंदगी कोई लंबी तैयारी नहीं, बल्कि छोटे-छोटे पलों की सच्ची उपस्थिति है, इसलिए रुकिए; साँस लीजिए और इस पल को महसूस कीजिए—क्योंकि जो भी है, बस यही एक पल है।

संगीता सेखानी
अंग्रेज़ी अध्यापिका

विद्या, विनय और विवेक

सच्ची विद्या मनुष्य में विनय (नम्रता) और विवेक (सही-गलत का ज्ञान) उत्पन्न करती है। केवल पुस्तकीय ज्ञान ही विद्या नहीं है; वास्तविक विद्या वही है, जो व्यक्ति के व्यवहार को शिष्ट, सोच को संतुलित और निर्णयों को न्यायपूर्ण बनाए। जिस छात्र में विनय होता है, वह सीखने के लिए सदैव तत्पर रहता है और विवेक होने से वह ज्ञान का सही उपयोग करता है। बड़ों का सम्मान करना हमारी संस्कृति की पहचान है, इससे संस्कारों का निर्माण होता है। हर परिस्थिति में विवेक से निर्णय लेने वाला छात्र ही जीवन में सही मार्ग चुन पाता है।

स्मरण रखें—सच्चा ज्ञान वही है, जो आपको ज़िम्मेदार,संवेदनशील और अच्छा मनुष्य बनाए।

रिम्पल मेदीरत्ता
संस्कृत अध्यापिका

सच्चा सुख

सच्चा सुख दूसरों को खुशी प्रदान करने से मिलता है। जो लोग निज़ी स्वार्थ के दायरे से निकलकर दूसरे के सुख को अपना सुख और दूसरों के दुख को अपना दुख समझते हैं, उनके कष्टों के निवारण में प्रयत्नशील रहते हैं, उनके चेहरे पर प्रसन्नता लाने के लिए भरसक प्रयास करते हैं, उन्हें ही सच्चे सुख की अनुभूति होती है। यह एक प्रकार का ऐसा पुण्य कार्य है, जिसे करके हमें आत्म-संतुष्टि, शारीरिक और मानसिक शांति तो मिलती ही है, साथ ही साथ हमारे अंदर की सारी नकारात्मकता दूर हो जाती है और एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। भारत देश में ऐसे अनेक महान संत हुए, जिनका आविर्भाव जन कल्याण हेतु हुआ। जैसे- महर्षि दधीचि, स्वामी विवेकानंद, परमहंस रामकृष्ण, योगी सम्राट श्री देवराहा बाबा, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि। प्रकृति भी परोपकार की भावना से ओत-प्रोत रहती है। वृक्ष दूसरों के लिए फलते हैं, बादल हमारे लिए बरसते हैं। मनुष्य जीवन अनेक जन्मों के संचित पुण्यों के कारण मिलता है, इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। स्वयं आगे बढ़ना चाहिए, दूसरों को भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करना चाहिए, तभी देश विकास के चरमोत्कर्ष तक पहुँच सकता है।

संध्या द्विवेदी
हिंदी अध्यापिका

मेरा शौक

किताबें पढ़ना मेरा शौक है। किताबें मुझे अपडेट रखती हैं और मेरी शब्दावली बढ़ाती हैं। मेरे स्कूल में एक पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न विषयों की, मनोरंजन की किताबें, उपन्यास, नैतिक कहानियाँ और सी.बी.एस.ई. से संबंधित किताबें हैं। मैं हर सप्ताह एक पुस्तक लेता हूँ, उसे पूरी रुचि से पढ़ता हूँ और अगले सप्ताह वापस कर देता हूँ। पिछले साल स्कूल ने 'राष्ट्रीय पुस्तक मेला' भारत मंडपम नई दिल्ली का दौरा आयोजित किया था। मैं भी वहाँ जाने वाले छात्रों में से एक था। स्कूल उन छात्रों को वहाँ ले जाता है, जो किताबें पढ़ने में रुचि रखते हैं। इससे मुझे किताबें पढ़ने के लिए और प्रोत्साहन मिला।

प्रेमचंद की कहानियाँ भी मुझे मंत्रमुग्ध करती हैं। मेरी पसंदीदा किताबें हैं- 'रोल्ड डाहल' की 'चार्ली' एंड 'चॉकलेट फैक्ट्री', 'जेनोरेमो स्टिल्टन', 'अमेजिंग विजार्ड', 'द मिस्ट्री ऑफ़ बरमूडा ट्राएंगल' एवं हिंदी की अनेक पुस्तकें। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मेरी अपनी लाइब्रेरी होगी, जिसमें दुनिया की लोकप्रिय किताबें होंगी।

आदित्य रावत
सातवीं बी

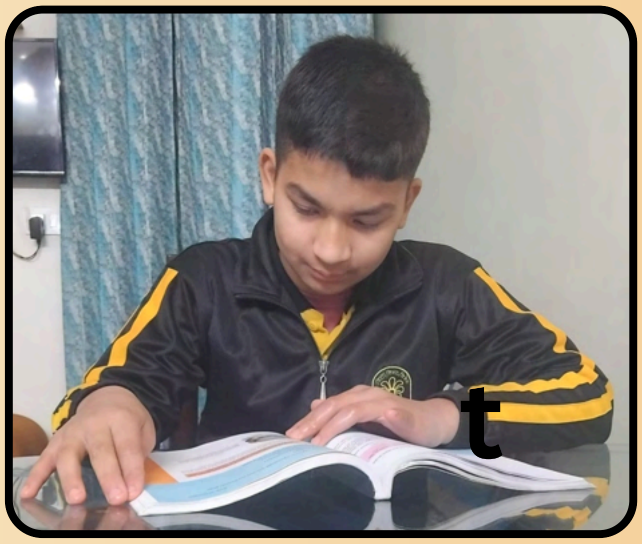

हर्षिता कालरा
आठवीं ए

भारत का प्रमुख पर्व नवरात्रि

भारत त्योहारों का देश है! इसमें हम सब भारतवासी अनेक प्रकार के त्योहार मनाते हैं। उनमें से एक प्रमुख त्योहार नवरात्रि है, जो कि नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें हिंदू नौ दिनों तक दुर्गा जी की नौ रूपों की पूजा करते हैं। नवरात्रि बुराई पर अच्छाई की जीत का एक त्योहार है।

नवरात्रि साल में दो बार चैत्र और क्वार के महीनों में मनाई जाती है। इसमें प्रथम दिवस लोग कलश स्थापना करते हैं और अखंड ज्योति जलाते हैं। इस दिन से हर जगह सकारात्मकता का वातावरण महसूस किया जाता है। क्वार के महीने में नौ दिनों के बाद दसवाँ दिन आता है, जिसे हम विजयदशमी या दशहरा कहते हैं। नवरात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, जैसे- गरबा और रामलीला का आयोजन किया जाता है। हम भारतवासी बड़े उत्साह के साथ यह त्योहार मनाते हैं।

रेयांश शुक्ला
सातवीं डी

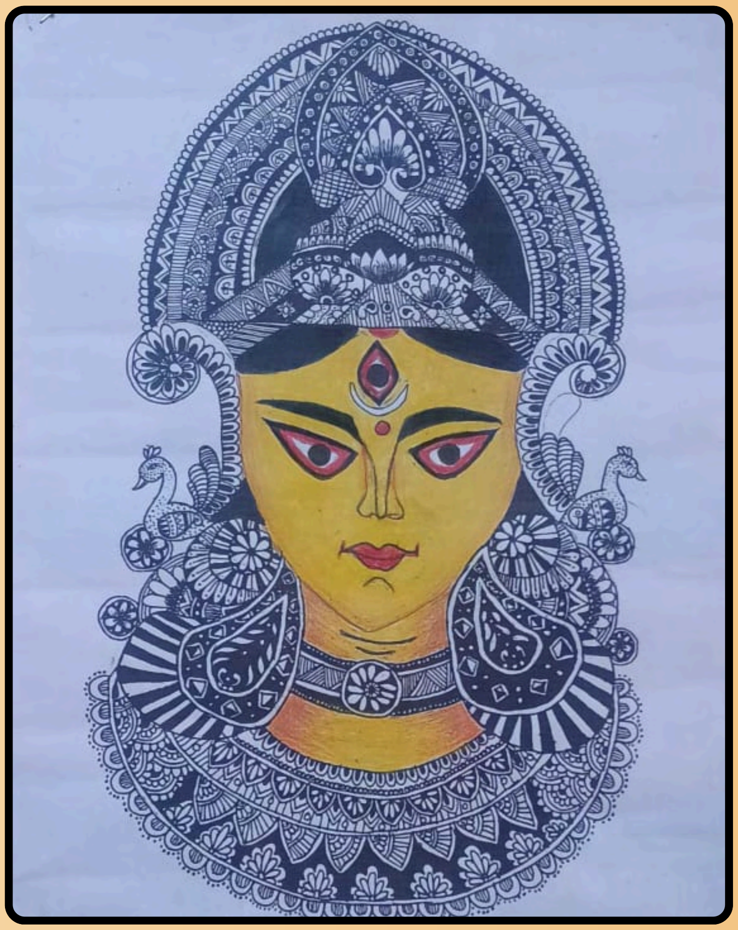

आरूही खरकिया
पाँचवीं ए

'गिटार' मेरा ज़ुनून

मेरा नाम आदित्य है और मैं कक्षा सातवीं का छात्र हूँ। बचपन में मैं अपने भाई को गिटार बजाते हुए देखता था। गिटार की मधुर ध्वनि मुझे अपनी ओर आकर्षित करती थी। एक दिन मैंने गिटार बजाना सीखने का फैसला किया। शुरुआत में मैंने तानसेन अकादमी से गिटार सीखा, लेकिन लॉकडाउन के कारण मेरी सीख बाधित हुई। मेरे भाई ने मुझे गिटार सिखाया। यह मेरे लिए उनके साथ के सबसे यादगार पल हैं। शुरुआत में मुझे गिटार बजाना सीखने में बहुत समय लगता था, लेकिन मेरे भाई ने कभी अपना धैर्य नहीं खोया। अब मैं यूट्यूब से नवीनतम गाने सीखता हूँ। मंच पर प्रस्तुति देने से मुझे उत्साह मिलता है। हाल ही में मैंने 'उत्तराखंड समाज अशोका' द्वारा आयोजित एक समारोह में प्रस्तुति दी।

आदित्य रावत
सातवीं बी

अनुभूति - (अनुभव एवं यात्रा संस्मरण)

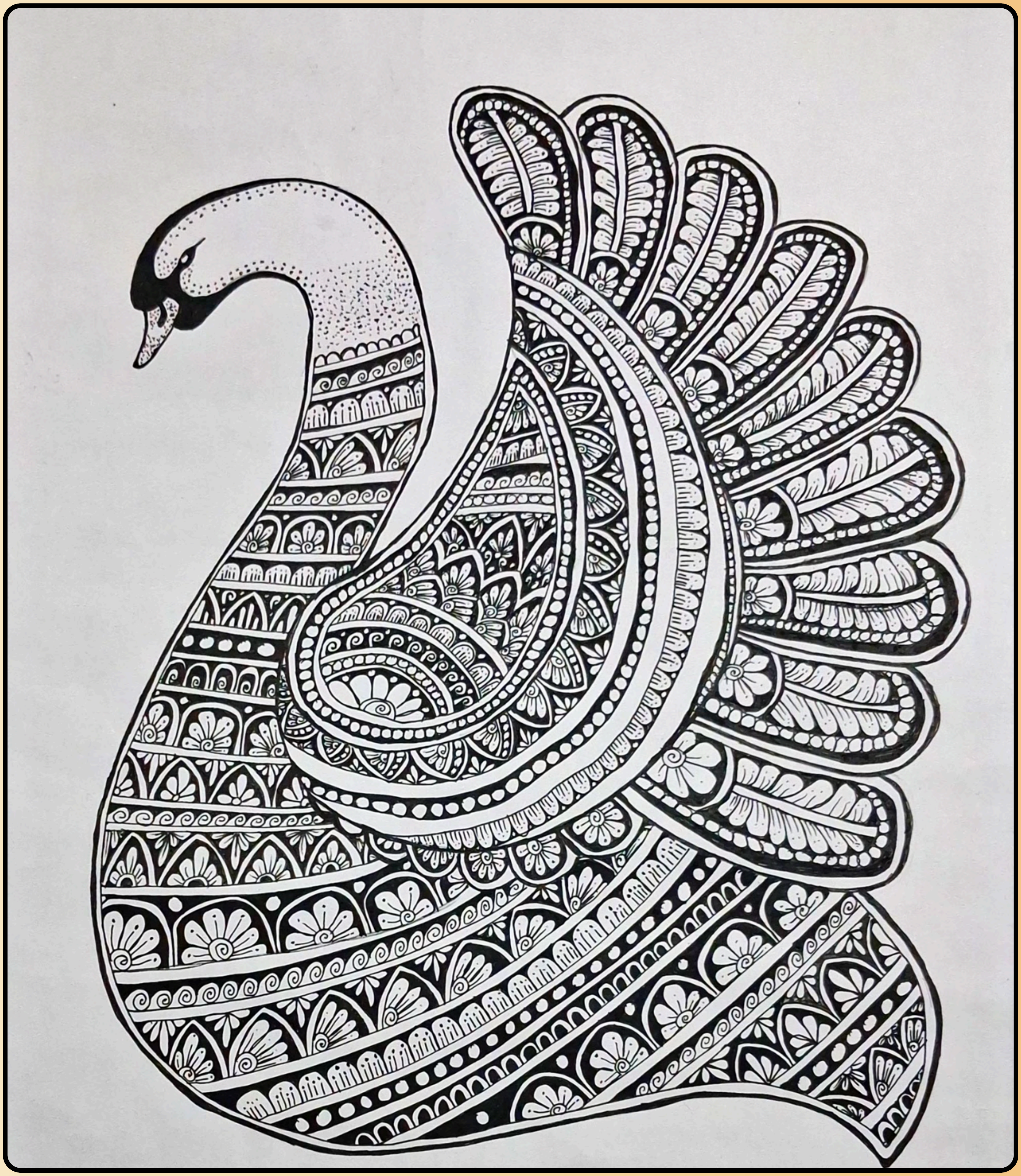

कृषिता
बारहवीं डी

गोवा : चकाचौंध से दूर, शांति की तलाश

बोर्ड परीक्षाओं की थकान के बाद इस वर्ष मुझे गोवा घूमने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए केवल एक पर्यटन नहीं, बल्कि अनुभवों और यादों का सुंदर संगम बन गई। हमने हवाई जहाज़ से गोवा की यात्रा की। ऊपर से समुद्र और धरती को देखना अपने आपमें एक रोमांचक अनुभव था।

गोवा पहुँचकर हमने उत्तर और दक्षिण, दोनों गोवा का भ्रमण किया। बागा बीच जैसे प्रसिद्ध समुद्र तट पर भी गए, जहाँ की नाइटलाइफ़ बहुत प्रसिद्ध है। रात के समय रोशनी, संगीत और माहौल आकर्षक था, लेकिन अत्यधिक भीड़ और गंदगी के कारण वहाँ का अनुभव कुछ खास नहीं रहा। तभी मुझे यह समझ आया कि विदेशी पर्यटक प्रायः उन्हीं समुद्र तटों पर अधिक मिलते हैं, जहाँ समुद्र तट साफ़ और शांत होते हैं।

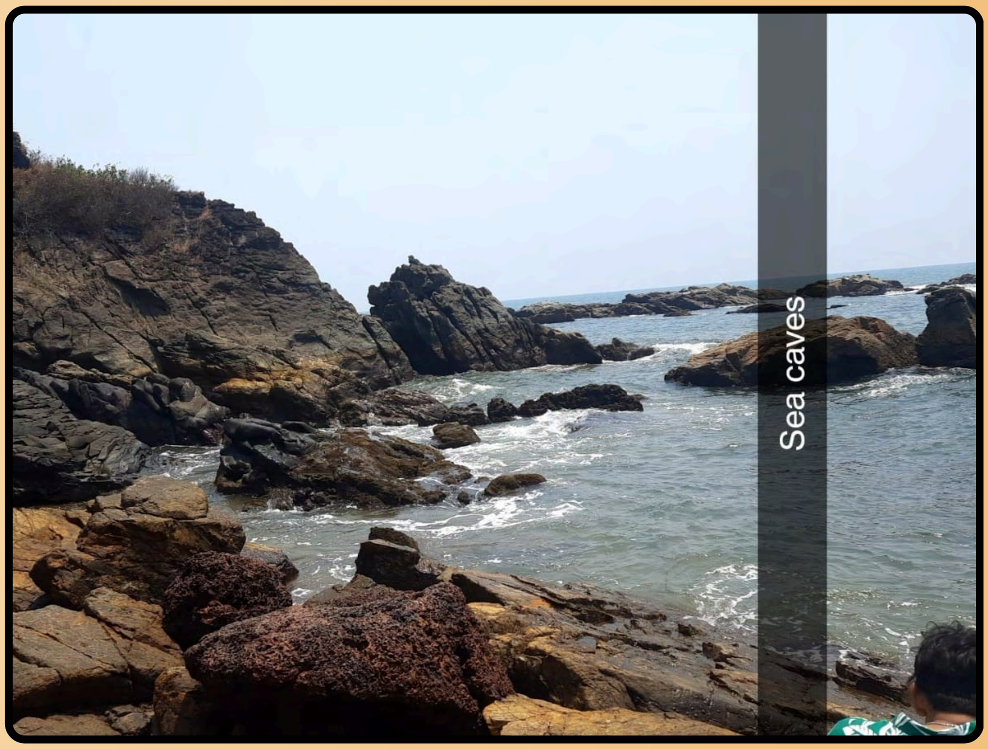

इसी कारण क्वेरिम बीच मेरा व्यक्तिगत पसंदीदा स्थान बन गया। यह गोवा का एक शांत समुद्र तट है। जहाँ मैंने पहली बार समुद्री गुफ़ाएँ देखीं और बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों को भी देखा। जब हम वहाँ पहुँचे, तब समुद्र तट पर फ़िल्म की शूटिंग भी चल रही थी, जिससे उस स्थान का अनुभव और भी रोमांचक हो गया। स्वच्छ वातावरण, शांति और प्राकृतिक सौंदर्य ने इस समुद्र तट को मेरे मन में विशेष स्थान दे दिया।

इसके अतिरिक्त हमने गोवा के कई अन्य समुद्र तटों का भी भ्रमण किया तथा कुछ ऐतिहासिक दुर्गों और किलों को भी देखा, जो गोवा के समृद्ध इतिहास की झलक देते हैं। यात्रा के दौरान हमें गोवा की विधान सभा देखने का अवसर भी मिला। हम पणजी पहुँचे, जहाँ की प्रसिद्ध क्रूज़ और चमक-दमक भरी दुनिया को हमने देखा, परंतु उसमें सम्मिलित नहीं हुए। वास्तव में, हम इस यात्रा पर चकाचौंध और भीड़ से दूर, शांति और प्रकृति के बीच समय बिताने के उद्देश्य से आए थे। इसी कारण हम पणजी में अधिक समय तक नहीं रुके।

हम जिस रिसॉर्ट में ठहरे थे, वह इतना विशाल था कि एक कोने से दूसरे कोने तक जाने के लिए ऑटो लेना पड़ता था। वह रिसॉर्ट किसी जंगल जैसा प्रतीत होता था, जहाँ वन्य जीवन, पेड़-पौधे तथा जीव-ज़ंतुओं की विविधता देखने को मिली। वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत और सुंदर था।

हमने गोवा के पारंपरिक कोंकणी भोजन का स्वाद लिया तथा एक प्रामाणिक गोअन-पुर्तगाली बेकरी भी देखी। जीप सफ़ारी के माध्यम से दूधसागर जलप्रपात देखने का अवसर मिला—यही वह प्रसिद्ध जलप्रपात है, जिसे फ़िल्म चेन्नई एक्सप्रेस में भी दिखाया गया था। उस दृश्य को वास्तविक रूप में अपनी आँखों से देखना अपने आप में एक अविस्मरणीय अनुभव था।

यह संपूर्ण यात्रा मेरे लिए अत्यंत सुंदर और यादगार रही। गोवा ने मुझे यह सिखाया कि वास्तविक सुंदरता अक्सर चकाचौंध से दूर, स्वच्छता, शांति और प्रकृति की गोद में छिपी होती है।

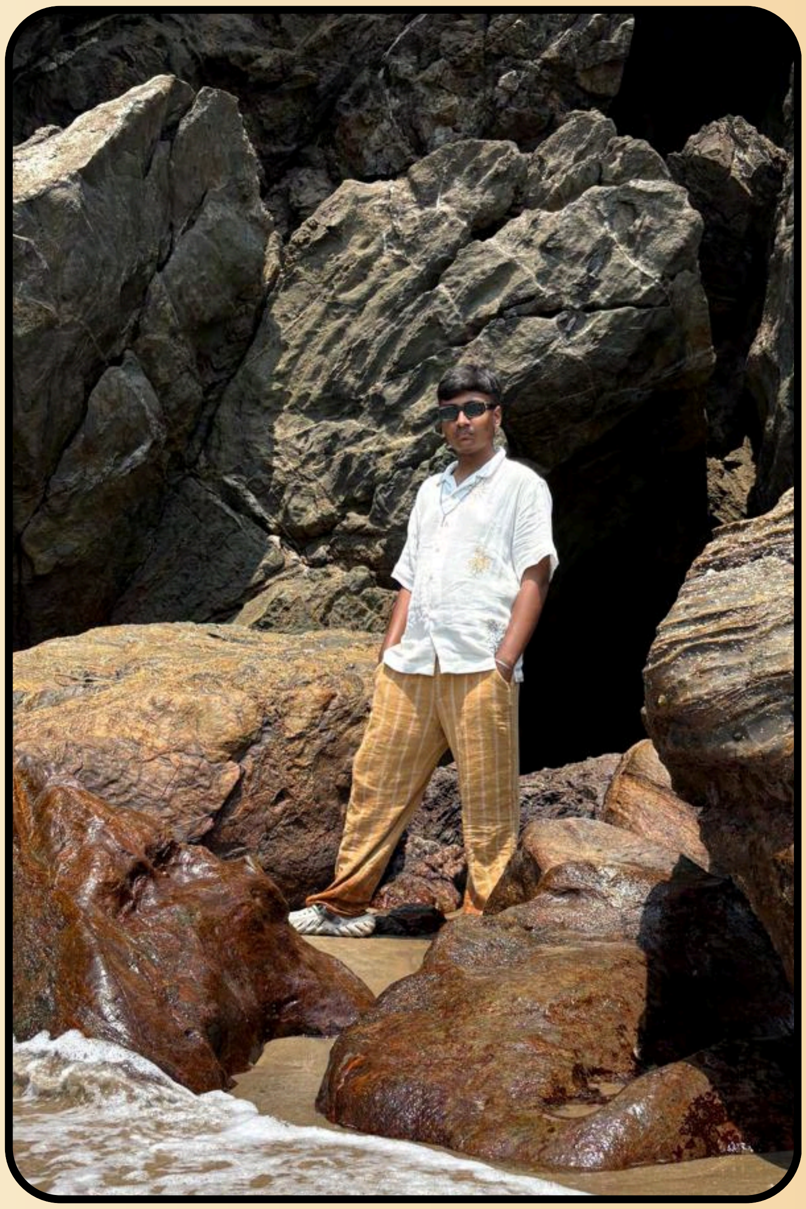

सच्चित वशिष्ठ
ग्यारहवीं सी

समर कैंप का मेरा अनुभव

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में हमारे स्कूल में समर कैंप लगाया गया। मैं बहुत उत्साहित थी क्योंकि इसमें मुझे नई-नई चीज़ें सीखने और करने का मौका मिला।

कैंप में मुझे डांस, स्केटिंग और एबेकस सिखाया गया। मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा डांस और स्किटिंग करने में आया। हमने अपने दोस्तों के साथ मिलकर बहुत मस्ती की।

स्केटिंग सर ने हमें चुस्ती के साथ बैलेंस करना सिखाया। डांस वाली शिक्षिका ने हमें डांस के साथ-साथ टीमवर्क और सबके साथ तालमेल करना सिखाया। एबेकस में हमें गिनती जोड़ना और घटाना सिखाया गया, जिससे मेरा गणित बहुत अच्छा हो गया।
इसके अलावा हमें ड्रॉइंग, पेंटिंग और खेलकूद की गतिविधियाँ भी करवाई गईं। इन सबने हमारी छुट्टियों को बहुत मज़ेदार और यादगार बना दिया। समर कैंप ने हमें नई-नई चीज़ें सीखने के साथ-साथ अनुशासन और समय का सही उपयोग करना भी सिखाया।

सच में, यह समर कैंप मेरे जीवन का एक बहुत ही सुंदर और अविस्मरणीय अनुभव रहा।

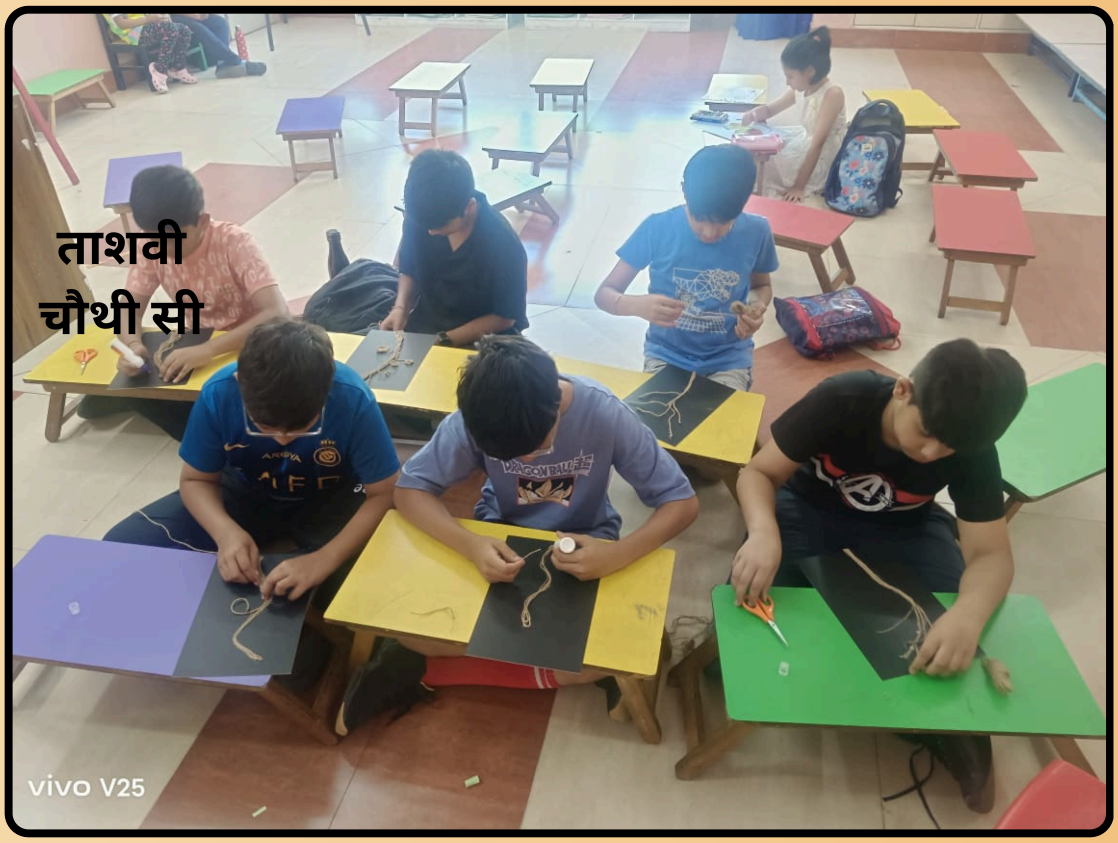

ताशवी
चौथी सी

यात्रा-वर्णन

गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने ननिहाल गई, जो 'हिमाचल प्रदेश' के 'कुल्लू' जिले के एक सुंदर गाँव 'पतलीकूल' में है। वहाँ जाना मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं हर बार अपने नाना-नानी, मामा-मामी और भाई-बहनों से मिलकर बहुत खुश होती हूँ।

मेरे ननिहाल के गाँव में बहुत सारे पालतू पशु हैं, जैसे-गाय, बकरी और कुत्ते और मुझे उनसे बहुत लगाव है। वहाँ के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और हरे-भरे पेड़-पौधे मन को बहुत भाते हैं।

एक दिन हम मामा, मामी और मौसी के साथ एक प्रसिद्ध मंदिर गए, जिसका नाम 'गुणा वाली माई' मंदिर है। यह मंदिर एक ऊँचाई पर स्थित है, जहाँ से आसपास का दृश्य बहुत ही सुंदर दिखाई देते हैं। मंदिर तक पहुँचने के लिए हमें एक झरना पार करना पड़ा, जो एक नया अनुभव था।

इसके बाद हम एक सुंदर नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ की ठंडी और साफ़ हवा मन को बहुत सुकून दे रही थी। मैं नदी की ठंडी जलधारा में नहाई और खूब मस्ती की। वहाँ की रेत भी बहुत मुलायम और चमकदार थी। यह स्थान पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

मैंने वहाँ 'हिमाचल राज्य पुस्तकालय' भी देखा और नेहरू जी की मूर्ति को नमन किया। वापसी में हम धर्मशाला रुके, जहाँ रिंकू तथा शशि मामा से मुलाकात हुई। वहाँ हमने शहीद-स्मारक पर पुष्प अर्पित किए और झूलों का आनंद लिया।

यह यात्रा मेरे लिए बहुत यादगार रही। मुझे अपने ननिहाल में समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। वहाँ का वातावरण, लोग, पशु और पहाड़ सब मेरे दिल के बहुत करीब हैं।

अर्वप्रणिका
तीसरी सी

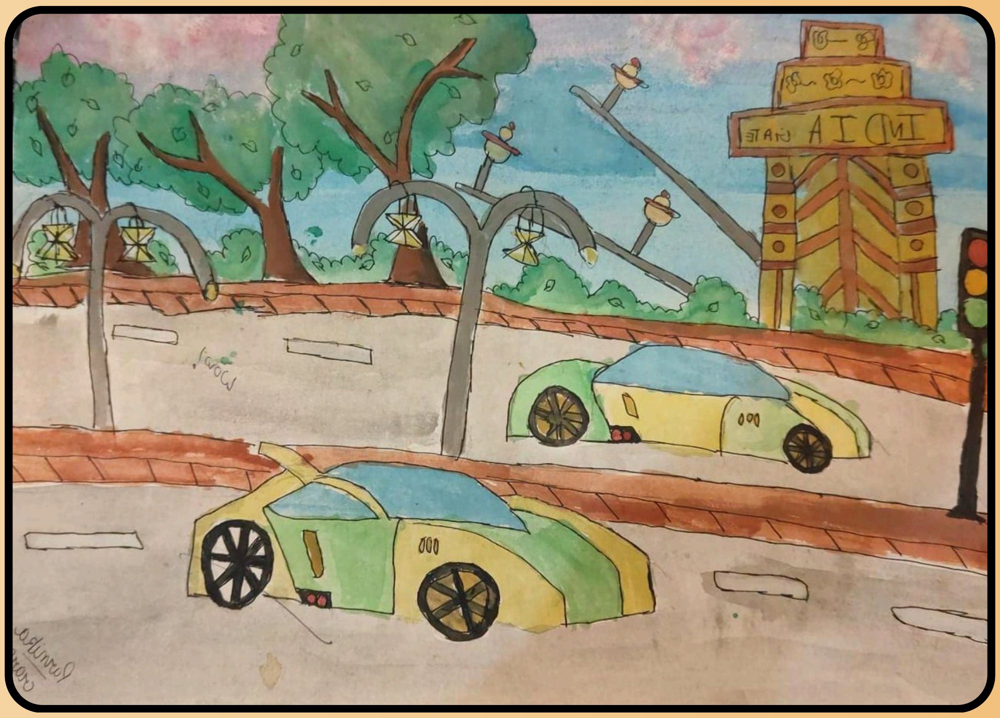

परनिका गर्ग
सातवीं डी

संस्कृति और समुद्र की लहरों के बीच एक यादगार यात्रा- 'गोवा'

आयशर स्कूल, फरीदाबाद के विद्यार्थियों का शैक्षिक भ्रमण अनुभव
(26-30 सितंबर 2025)

सच्चित वशिष्ठ-"इस यात्रा ने हमें सिखाया कि असली शिक्षा अनुभवों में बसती है।”

प्रियांशी द्विवेदी-"सीखना केवल किताबों से ही नहीं होता, बल्कि अनुभवों से भी होता है, जो कि हमने **गोवा यात्रा** के दौरान सीखा।”

'सितंबर 2025 का अंतिम सप्ताह आयशर स्कूल, सैक्टर 46, फरीदाबाद के विद्यार्थियों के लिए किसी रोमांचक उपन्यास से कम न था।'

26 से 30 सितंबर तक चली पाँच दिवसीय शैक्षिक यात्रा ने गोवा के सुनहरे तटों, प्राचीन धरोहरों और जीवंत संस्कृति के माध्यम से छात्रों को एक ऐसा अनुभव दिया, जिसने उनकी दृष्टि को व्यापक और हृदय को समृद्ध कर दिया। यह यात्रा केवल एक पर्यटन नहीं, बल्कि एक 'जीवंत अनुभव-प्रयोगशाला' थी।

'बैसिलिका ऑफ़ बॉम जीसस- पुर्तगाली स्थापत्य की भव्यता में खोए विद्यार्थी'

यात्रा का प्रारंभ कोलवा बीच की मनमोहक छटा से हुआ। सूर्य की सुनहरी किरणें समुद्र की लहरों पर नाच रही थीं और नमकीन हवा ने सभी को तरो-ताज़ा कर दिया।

ओल्ड गोवा पहुँचकर दल ने यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के दर्शन किए— बैसिलिका ऑफ बॉम जीसस की भव्यता से कैथेड्रल का विशाल गुंबद और पुरातत्व संग्रहालय के प्राचीन अवशेष। इस हेरिटेज विशेषज्ञ के सत्र ने गोवा के 450 वर्षीय पुर्तगाली औपनिवेशिक इतिहास को जीवंत कर दिया। पत्थरों की दीवारें भी मानो बोल उठीं।

पर्यटन अर्थव्यवस्था एवं वाणिज्यिक जीवन का जीवंत अध्ययन

लोहिया मैदान में स्थानीय विक्रेताओं, हस्तशिल्प विक्रेताओं, खाद्य दुकानदारों और छोटे उद्यमियों से बातचीत करके जाना कि पर्यटन गोवा की जीवनरेखा कैसी है। 70% से अधिक स्थानीय रोज़गार पर्यटन पर निर्भर हैं।

फाउंटेन्हास लैटिन क्वार्टर की रंग-बिरंगी गलियाँ और पुर्तगाली शैली के घर विद्यार्थियों के लिए आश्चर्य का केंद्र बने। 'मिरामार बीच' की शांत लहरें उनके मन को विश्राम देती रहीं।

मंडोवी नदी क्रूज पर गोअन लोकनृत्य — थिरकते नर्तकों के साथ झूमते विद्यार्थी

यात्रा का चरमोत्कर्ष था 'मंडोवी नदी पर सूर्यास्त क्रूज' ठंडी हवा, नदी की लहरों की सरगम और गोअन लोक कलाकारों का स्वागत — कोलसरी नृत्य, ढोलक की थाप और मंदर की मधुरता ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। रंगीन पारंपरिक वेशभूषा में नर्तकियों ने गोवा की सांस्कृतिक आत्मा को उकेरा। नदी के ऊपर सूर्य की लालिमा और जगमगाती पणजी की रोशनी ने उस क्षण को अमर बना दिया।

टीमवर्क और जीवन-कौशल का पाठ

मिरामार बीच

पूरे भ्रमण में शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने अनुशासन, समय-पालन और सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। बस-यात्रा के बीच गायन, समूह चर्चाएँ और सामूहिक-हास्य ने बंधनों को मज़बूत किया।

इस यात्रा ने न केवल ज्ञान दिया, बल्कि आत्मविश्वास और नेतृत्व जैसे जीवन-मूल्य भी निखारे।

विदाई और अमिट स्मृतियाँ-
अंतिम दिन मिरामार बीच पर विदाई समारोह में सभी के चेहरे संतुष्टि से जगमगा रहे थे। समुद्र की लहरें मानो कह रही थीं — 'अपनी प्रसन्नता की छटा बिखेरने मेरे तटों पर पुनः आना।'

आयशर स्कूल प्रबंधन ने इस सफल आयोजन पर पूरे दल- शिक्षकों, विद्यार्थियों और सहयोगी स्टाफ़ को बधाई दी। प्रधानाचार्य ने कहा-

'ऐसी यात्राएँ कक्षा की सीमाओं को तोड़कर वास्तविक जगत से जोड़ती हैं।'

प्रधानाचार्य का संदेश-

"यह यात्रा आयशर स्कूल के 'सीखो, जियो और अनुभव करो' दर्शन का जीवंत प्रमाण है।"

यह गोवा भ्रमण विद्यार्थियों के हृदय में इतिहास की गहराई, संस्कृति की मिठास और मित्रता का अमृत हमेशा हिलोर लेता रहेगा।

डॉ. के.के. शर्मा

आयशर की रसोई (व्यंजन विधियाँ)

प्रियांशी द्विवेदी
बारहवीं सी

ओरियो रोल्स रेसिपी

सामग्री:

◦ ओरियो कुकीज़ – 3 पैकेट (हर एक 45 ग्राम)
◦ दूध पाउडर – 1 टेबल स्पून
◦ पिघला हुआ मक्खन – 2 टेबल स्पून (अलग-अलग इस्तेमाल होगा)
दूध – 2 टेबल स्पून

विधि:

1. क्रीम अलग करें:
ओरियो कुकीज़ को खोलकर उनके बीच की क्रीम अलग कर लें।
बिस्किट और क्रीम को अलग-अलग रखें।
2. फ़िलिंग तैयार करें:
निकाली हुई क्रीम में 1 टेबल स्पून दूध-पाउडर और 1 टेबल स्पून पिघला मक्खन डालें।
अच्छी तरह मिलाकर एक चिकना मिश्रण तैयार करें।
इसे साइड में रख दें।
3. डो (आटा) तैयार करें:
ओरियो बिस्किट को मिक्सर में डालकर बारीक पीस लें।
पिसे हुए बिस्किट में 1 टेबल स्पून पिघला मक्खन और 2 टेबल स्पून दूध डालें।
अच्छे से मिलाकर एक सॉफ़्ट डो तैयार करें।
4. डो बेलें:
तैयार डो को ज़िप बैग में रखें या दो बटर पेपर के बीच रखें।
बेलन से हल्के हाथों से बेलकर एक समतल, चपटा, आयताकार आकार
बनाएँ। किनारों को चाकू से काटकर सीधा कर लें।
5. फ़िलिंग लगाएँ:
बेलकर तैयार डो पर क्रीम वाली फ़िलिंग समान रूप से फैलाएँ।
6. रोल करें और फ्रिज में रखें:
अब इसे धीरे से रोल करें (स्विस रोल की तरह)।
रोल को लपेटकर फ्रिज में 2 घंटे के लिए सेट होने रखें।
फ्रिज से निकालकर मनचाहे टुकड़ों में काटें और स्वादिष्ट ओरियो रोल्स का आनंद लें।

वंशिका ग्रोवर
बारहवीं ए

ग्ल्यूटेन फ़्री रागी कुकीज़

सामग्री:

- गुड़ पाउडर - 1/2 कप (60 gram)
- रागी आटा - एक कप। (150 ग्राम)
- बेकिंग पाउडर - 1. 1/2 टी स्पून
- दालचीनी पाउडर - 1/2 टी स्पून
- दूध - 2 - 3 टेबल स्पून
- तिल (Sesame Seeds) -2-3 ग्राम
- वनीला एसेंस - 1. 1/2 टी स्पून

विधि:

1. पिघले हुए मक्खन और गुड़ पाउडर को अच्छे से फेंट लें, जब तक मिश्रण हल्का और फूला हुआ न हो जाए।

2. इसमें वनीला एसेंस और दूध डालकर फिर से फेंटें।

3. अब इसमें रागी का आटा, बेकिंग पाउडर और दालचीनी पाउडर डालें और दूध के साथ आटा गूथकर डो बना लें।

4. इस डो को 20-30 मिनट के लिए फ़्रीज़ करें।

5. पहले से गरम ओवन में 180° C पर 10-15 मिनट तक बेक करें।

वान्या
चौथी सी

संस्कृत मंजरी

विवान राना
छठी ए

गुरोः महत्वम्

गुरुः अस्माकं जीवनस्य दीपः अस्ति। सः अज्ञानरूपतमसः नाशकः, ज्ञानरूपप्रकाशस्य प्रसारकः च अस्ति। यथा सूर्यः, सर्वेषां लोकानां प्रकाशदायकः भवति, तथा गुरूः प्रकाशदायकः भवति । गुरोः विना ज्ञानं न संभवति, संस्कार: न विकसति, चित्तं न शुध्यति । गुरूः केवलं शिक्षकः न, अपितु मार्गदर्शकः, प्रेरकः, मित्रं च अस्ति। गुरूः विद्यार्थिनः, आत्मबलं, नीति, धर्म, सत्यं च बोधयति । ते मानवसामाजस्य निर्माणकर्तारः भवन्ति । गुरोः उपदेशेन विद्यार्थी जीवनस्य कठिनमार्गे दृढतया गच्छति। गुरोः कृपया शिष्य: आत्मविश्वासं प्राप्नोति, कार्य निष्ठां धारयति, समाजे आदर्शः भवति ।" गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः "इति श्लोकेन गुरोः दैवस्वरूपत्वं निर्दिष्टम् अस्ति। गुरुः शिष्ये दिव्यं ज्ञानं निवेशयति । प्राचीनकाले गुरुकुलव्यवस्था आसीत्, यत्र शिष्याः स्वगुरोः समीपे निवसन्तः न केवलं विद्यां, अपितु आचारं, सदाचारं, विनयं च अधीयन्ते स्म । गुरूः एव राष्ट्रस्य भविष्यं निर्माता । यत्र गुरवः सन्ति, तत्र संस्कारः अस्ति, यत्र संस्कारः, तत्र शान्तिः यत्र च शान्तिः तत्र समृद्धिः । अतः अस्माभिः सदैव गुरून् प्रति आदरः, कृतज्ञता च धारणीया। गुरोः विना जीवनं निस्सारं, दिशाहीनं च भवति । गुरवः एव अस्माकं जीवनस्य दीपकाः ते अस्माकं हृदयेषु सततं प्रकाशन्तु ।

रिजवंश गोसांई
नवीं बी

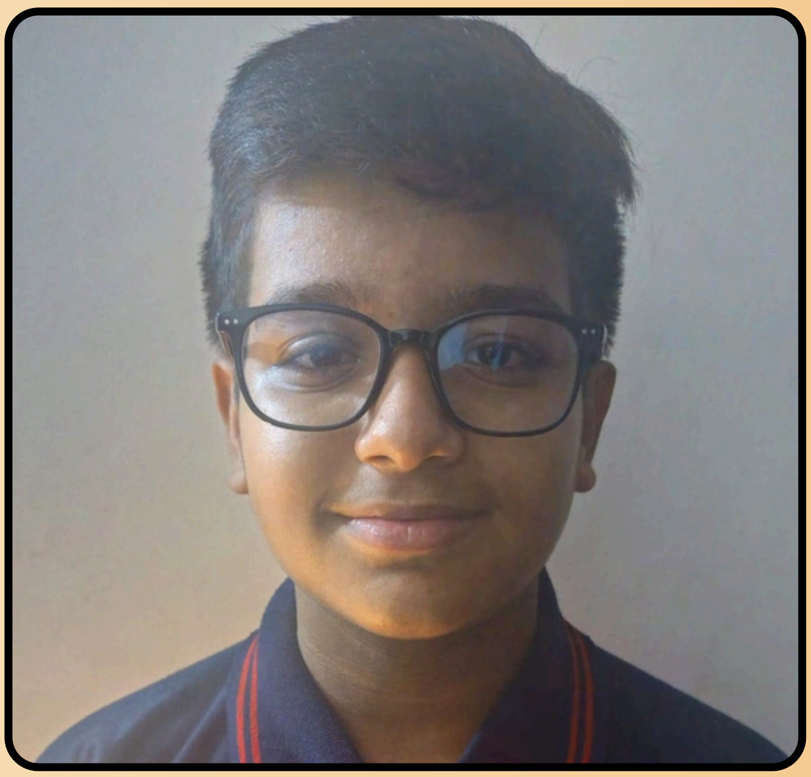

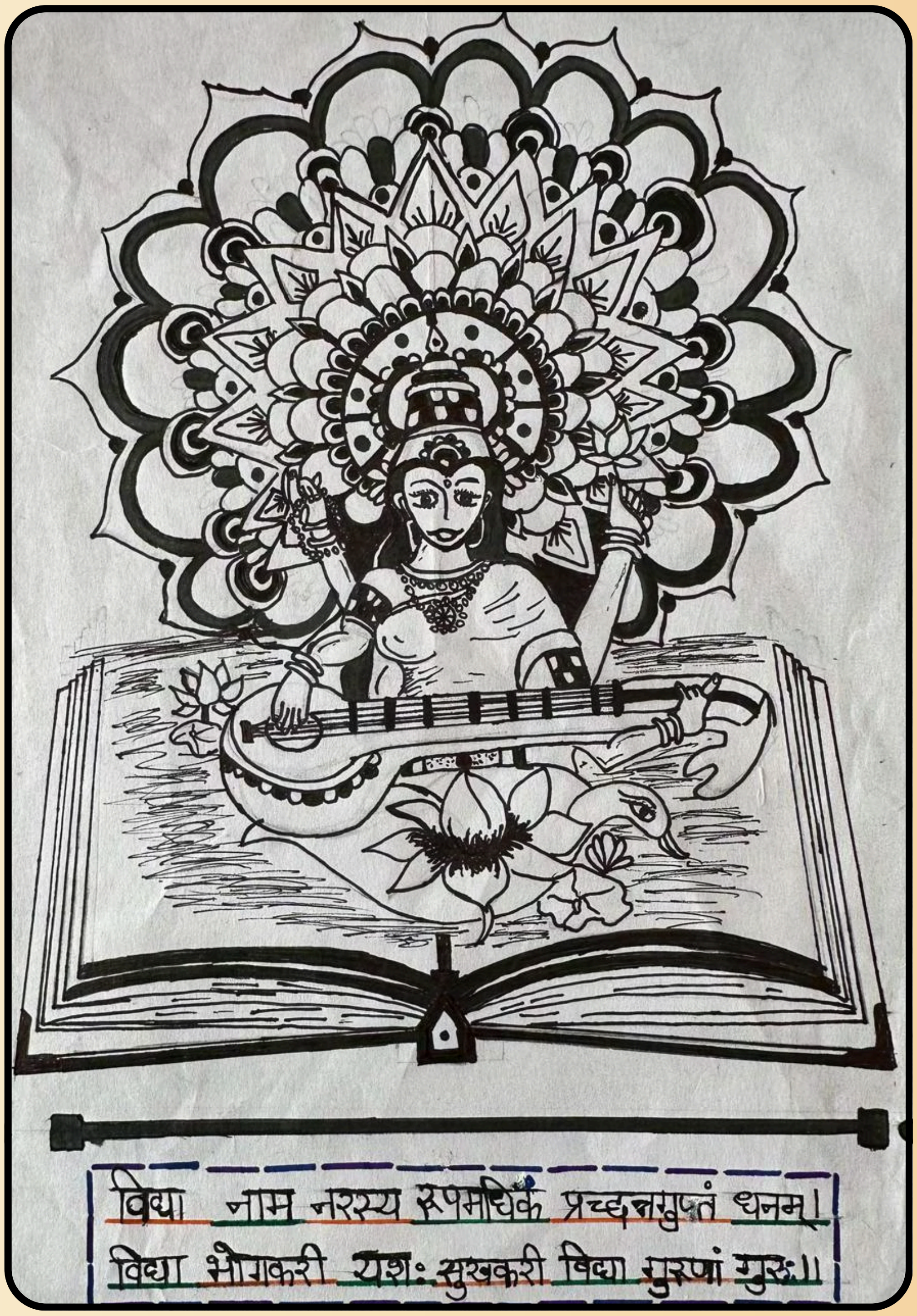

शिवांश गर्ग
सातवीं ए

एकलव्य सिंह
छठी सी

अद्रिता
सातवीं ए

हिताशी
आठवीं ए

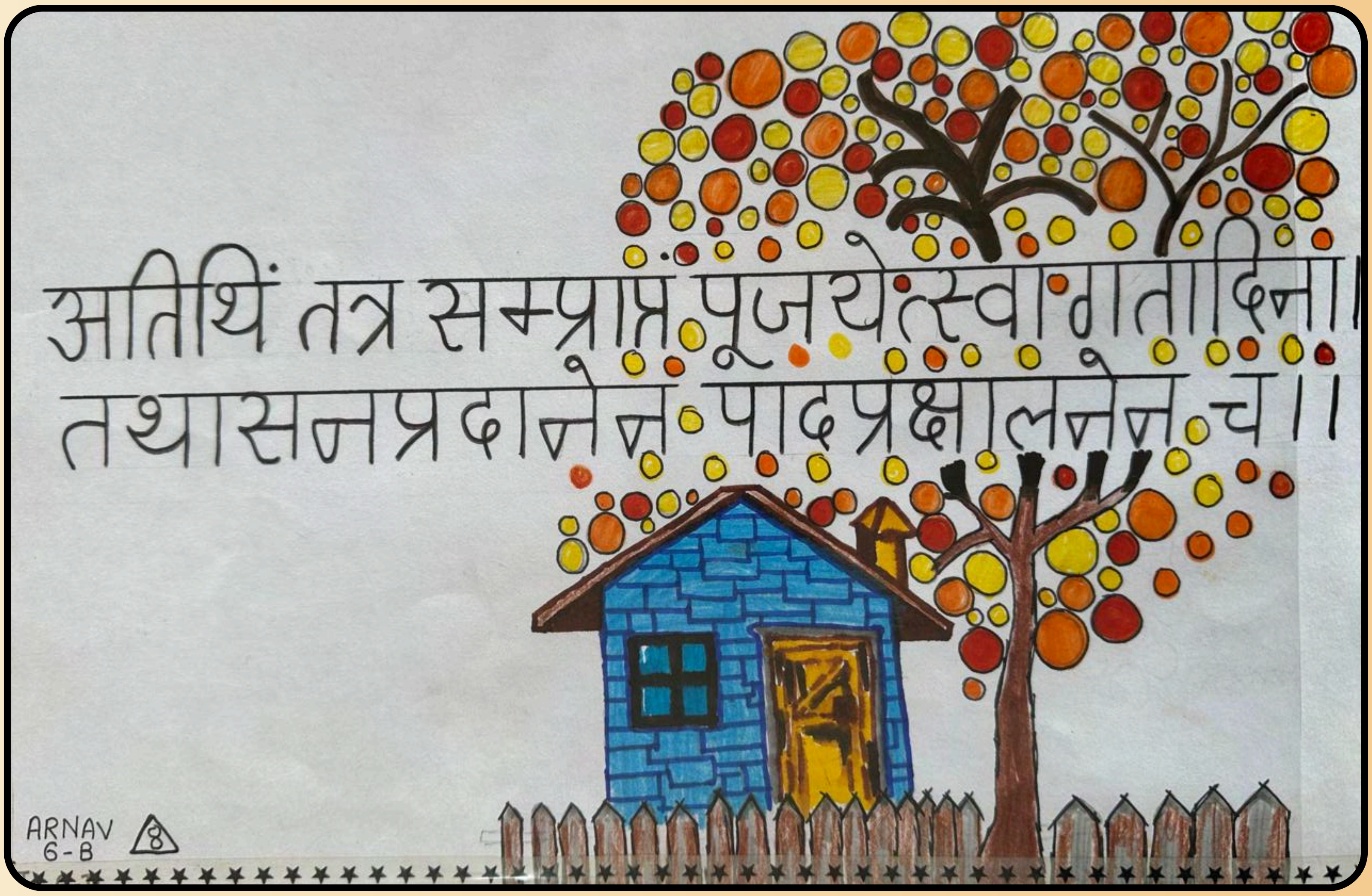

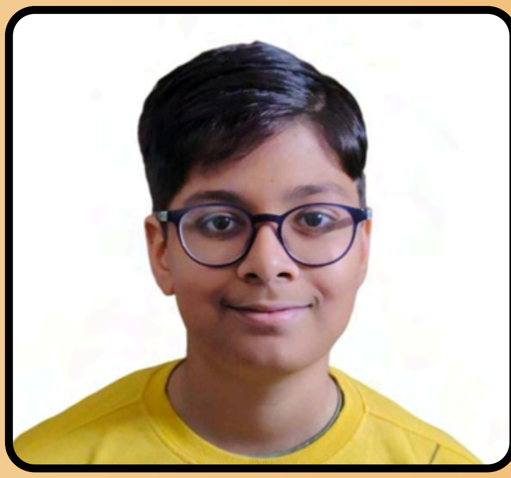

अर्णव गोयल
छठी बी

रचित पातरा
सातवीं बी

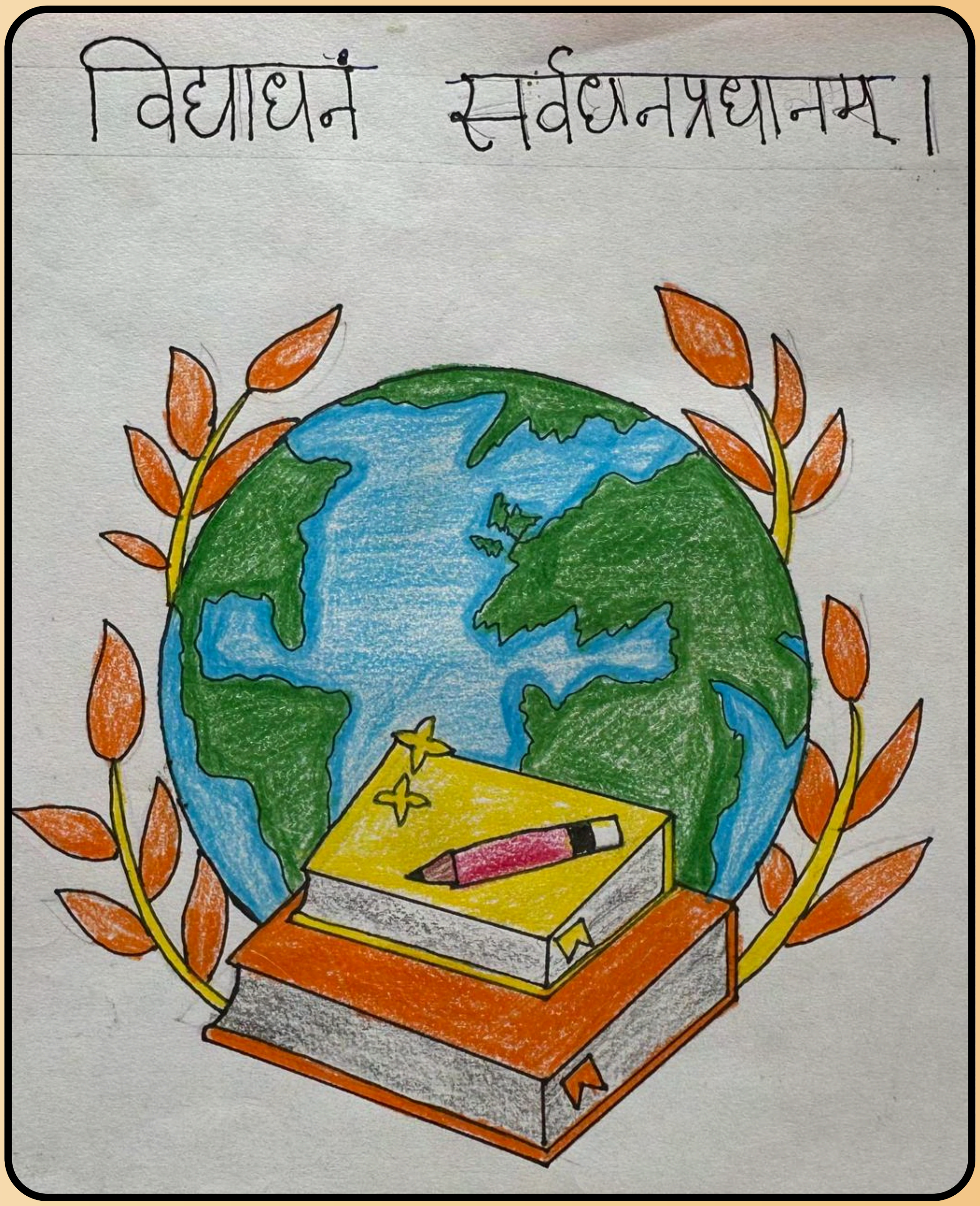

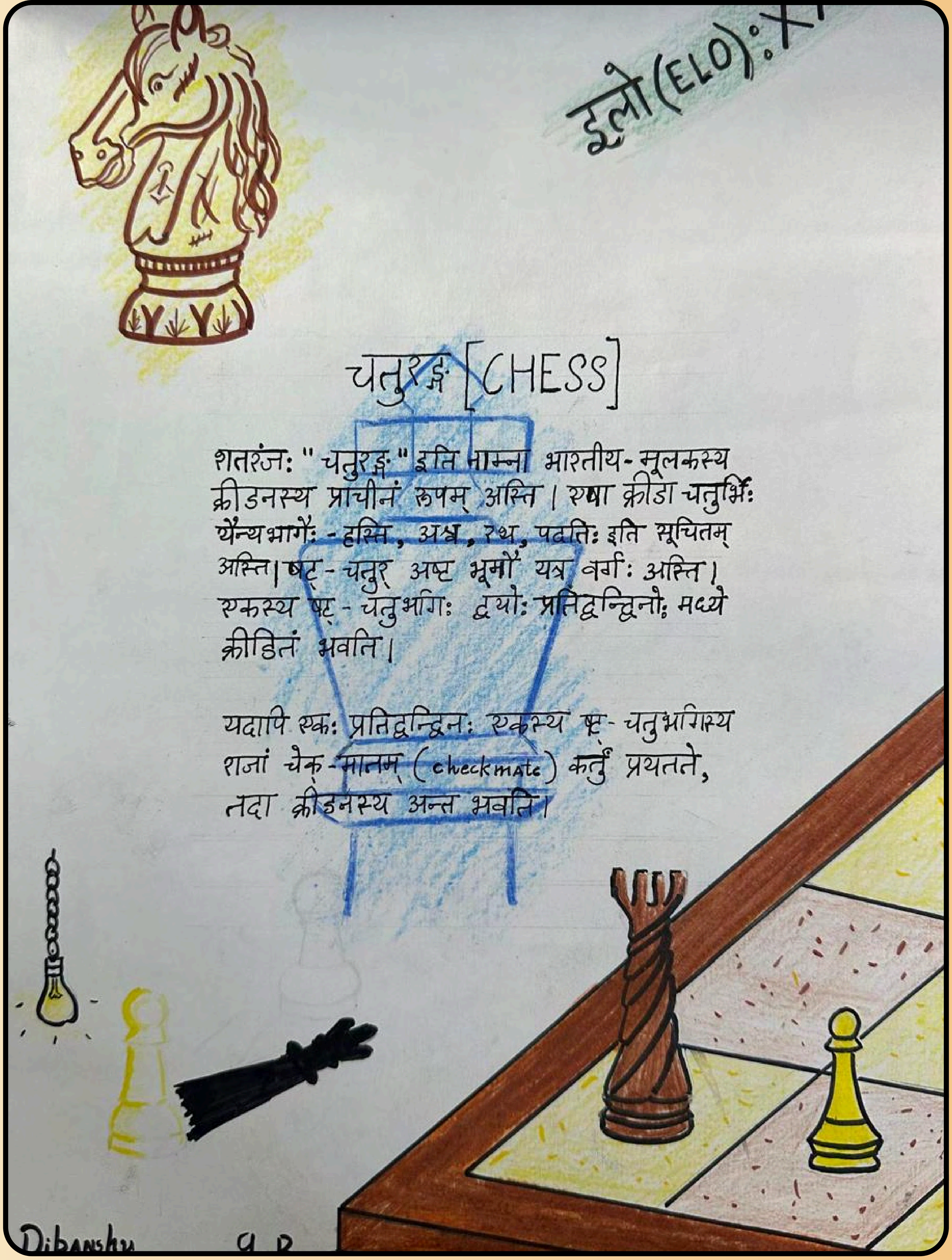

दीपांशु पटनायक
नौवीं बी

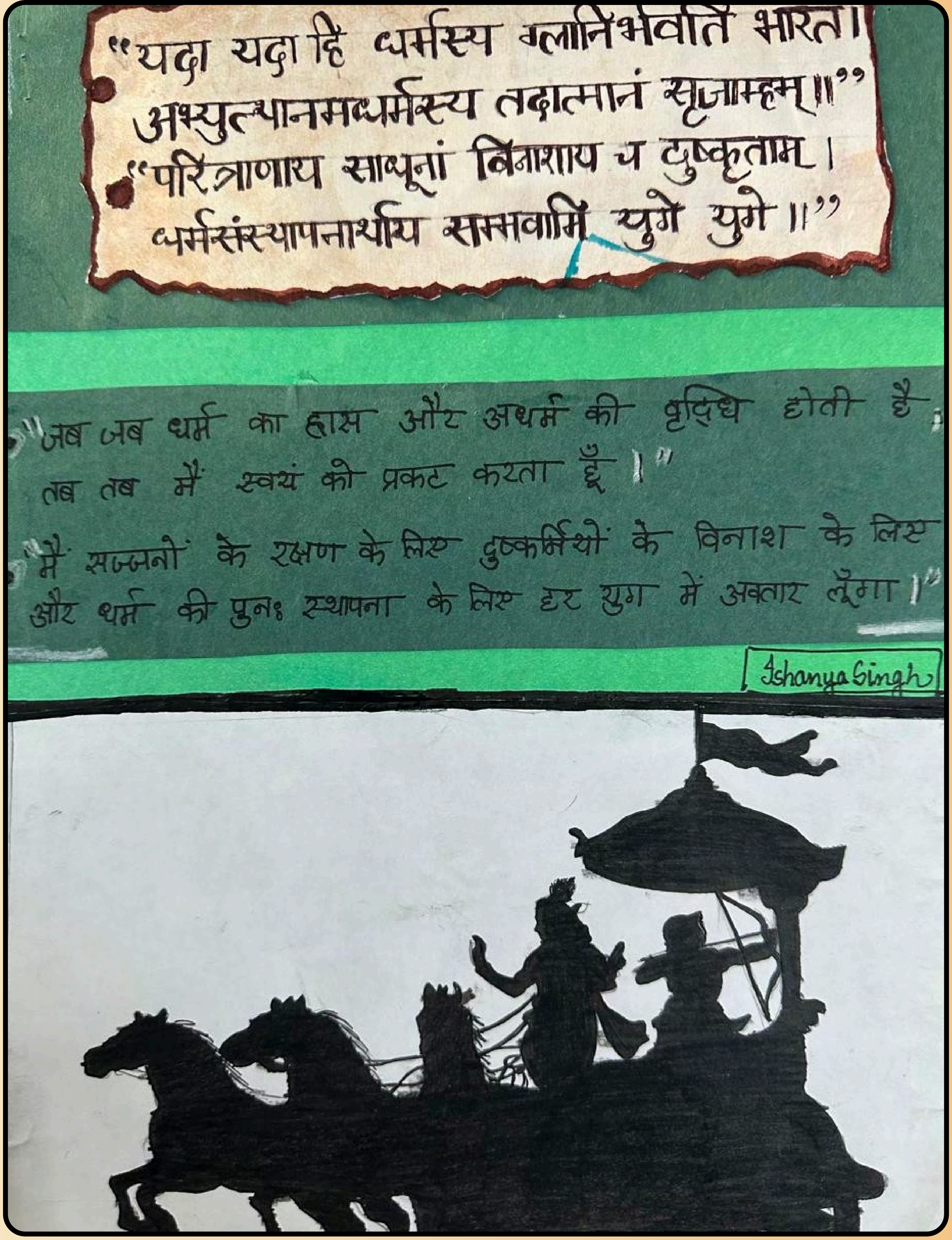
"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"
"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥"
"जब जब धर्म का ह्रास और अधर्म की वृद्धि होती है,
तब तब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ।"
"मैं सज्जनों के रक्षण के लिए दुष्कर्मियों के विनाश के लिए
और धर्म की पुनः स्थापना के लिए हर युग में अवतार लूँगा।"
Ishanya Singh

इशन्या सिंह
आठवीं ए

इहिता सिंह
आठवीं ए

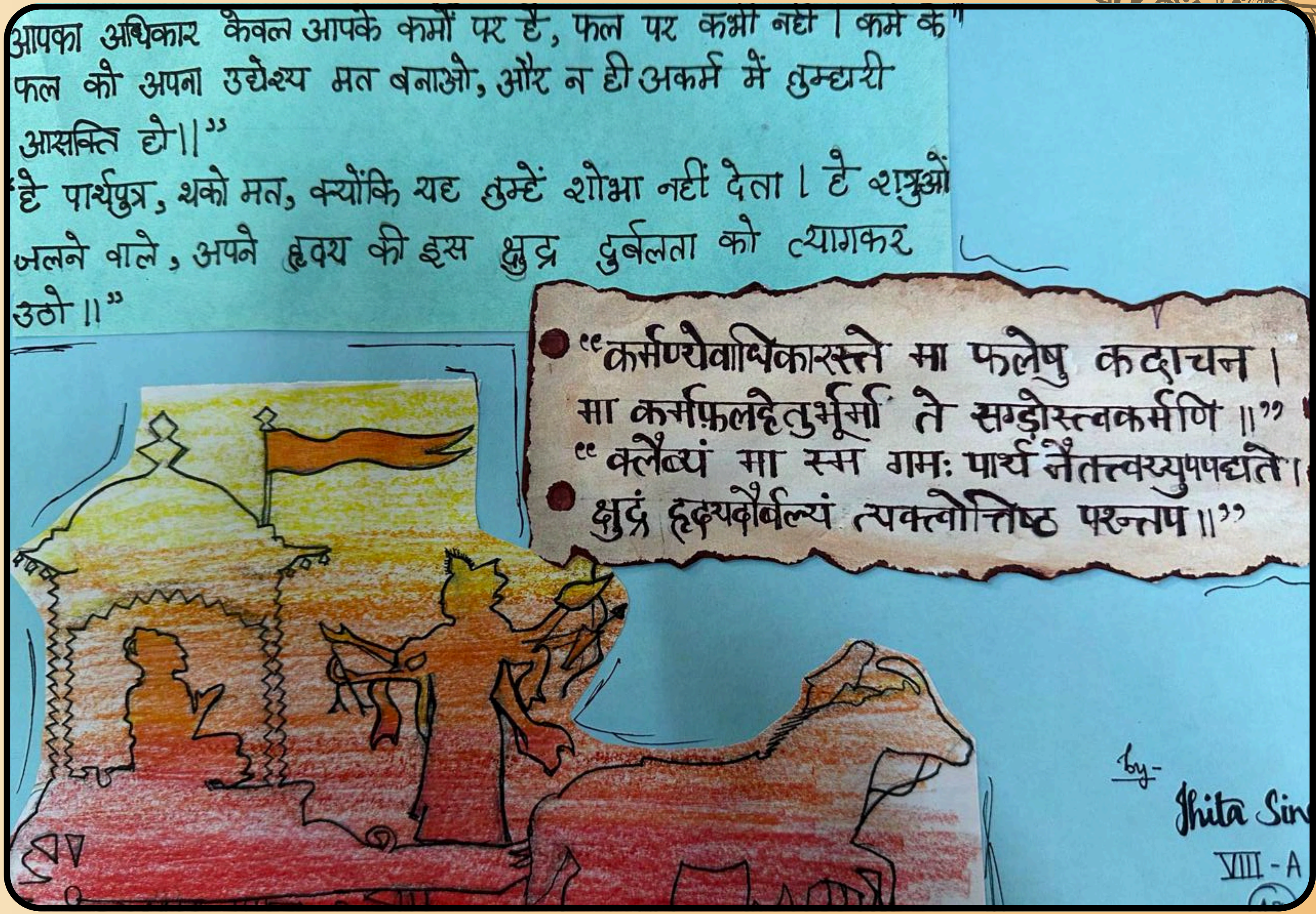

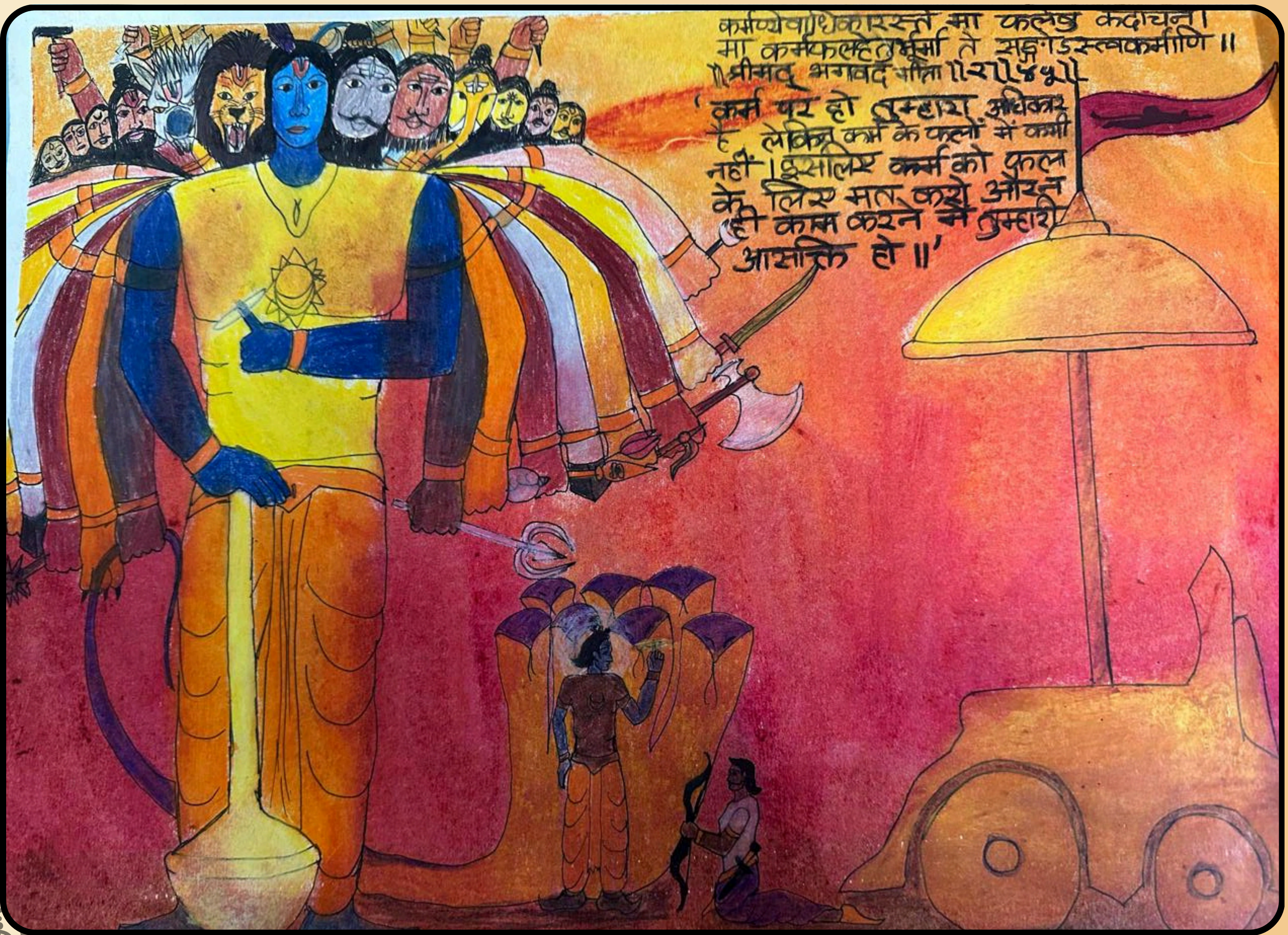

पूरव पटनायक
आठवीं ए

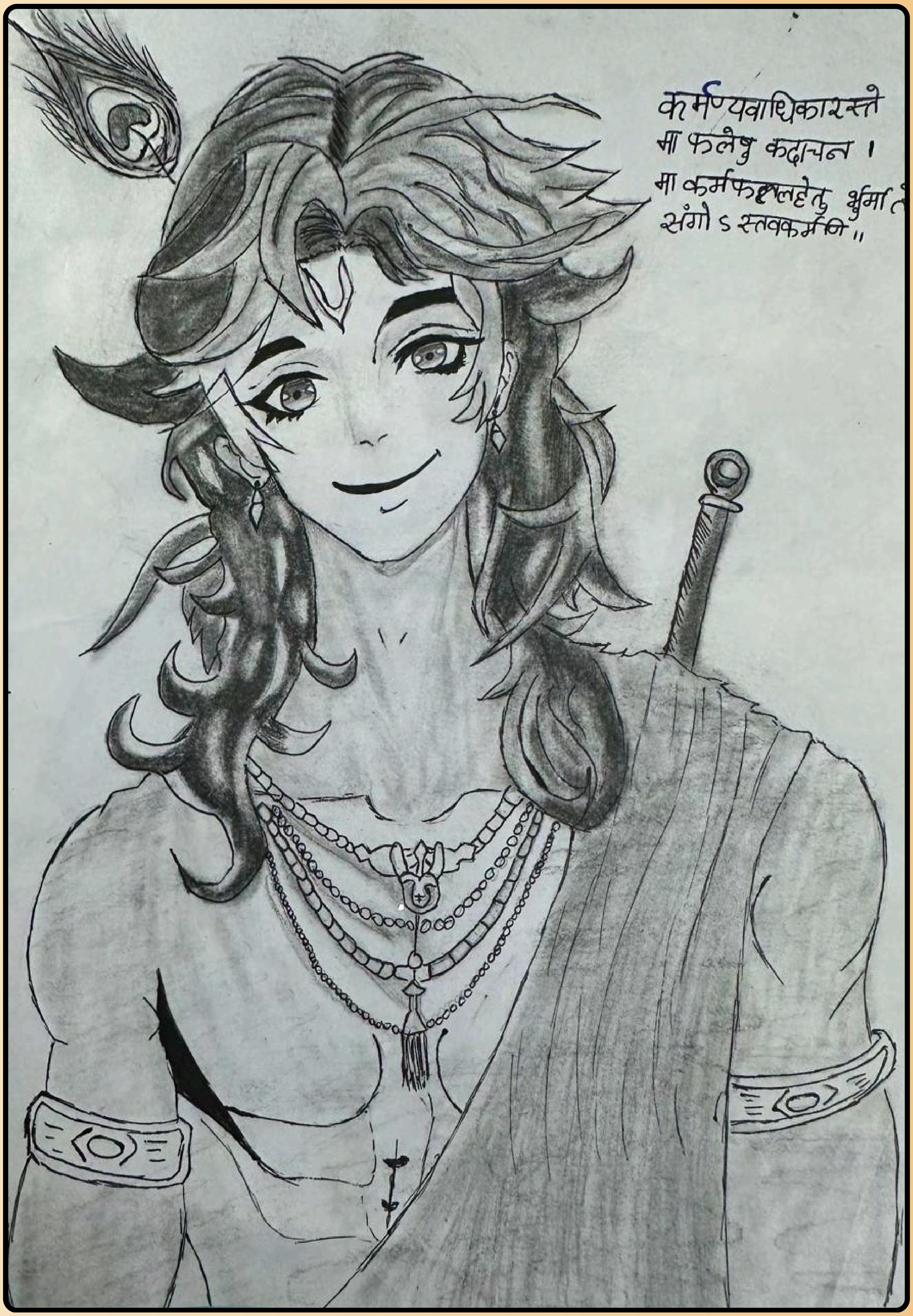

अनिकेत तिवारी
आठवीं ए

French

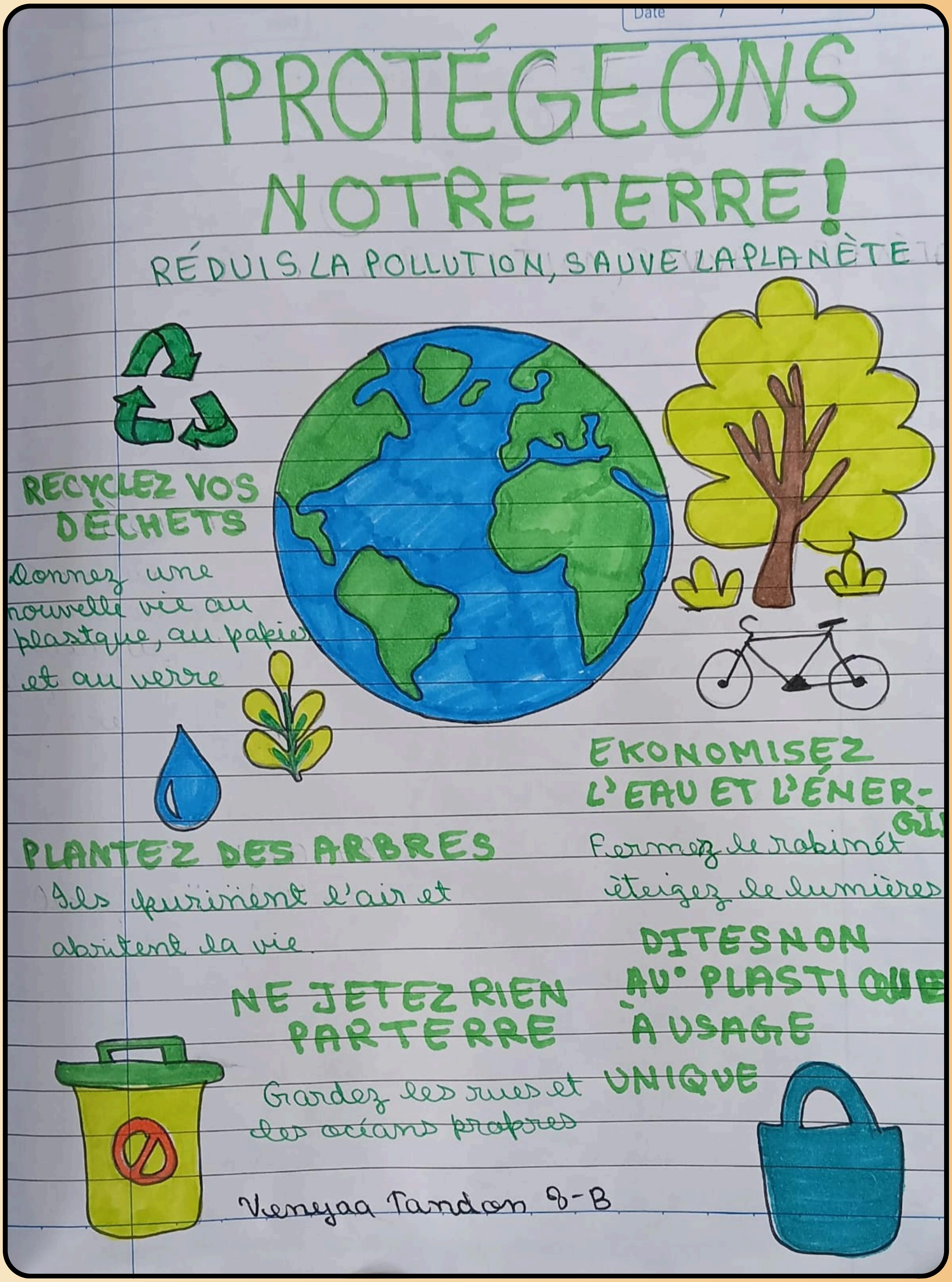

Venyaa Tandon

8B

WHY LEARNING FRENCH IS IMPORTANT

The world these days is no longer confined to the four walls of our homes. Every child today must work towards developing skills that would cater to global needs. Learning French at the school level opens young minds to a global language. At an early age,French also builds a solid foundation for learning other languages, as many English words come from French. As a French teacher, I believe introducing French in schools helps students grow into confident, open-minded global citizens who appreciate diversity and are better prepared for future academic and career opportunities.

AANCHAL BHASIN
FRENCH TEACHER

Venyaa Tandon
8B

Manasvi
9D

Aneeketh pandey
7C

हृदयांगिनी कार्यकारिणी मंडल

संपादकीय

प्रिय पाठको हिंदी संस्कृत और फ्रेंच विभाग की ओर से आयशर विद्यालय की पत्रिका हृदयांगिनी प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत हर्ष और उत्साह का अनुभव हो रहा है। इन भाषाओं को विद्यालय के विद्यार्थियों ने न केवल शब्द दिए हैं, बल्कि चित्रात्मक प्रस्तुति, भावों और कल्पना की उड़ान, बौद्धिक चिंतन आदि भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार मोती की तरह पिरोए हैं।
छात्र-छात्राओं के सतत एवं अथक प्रयास, शिक्षक, शिक्षिकाओं और प्रधानाचार्य श्री गुनेंद्र मिश्रा जी के सुंदर व कुशल मार्गदर्शन के कारण ही यह संभव हो सका है। हमें पूरा विश्वास है कि आगामी समय में भी इसी प्रकार भाषा,संस्कृति एवं साहित्य का संवर्धन होता रहेगा।

संपादक मंडल-
संरक्षक (पेट्रन)
प्रधानाचार्य श्री गुनेंद्र मिश्रा

प्रकाशन प्रबंधक-
सुश्री संगीता सेखानी

प्रभारी शिक्षिकाएँ-
हिंदी विभाग-
श्रीमती संध्या द्विवेदी
श्रीमती रितु गुलाटी
श्रीमती अलका आनंद
श्रीमती सीमा रानी

छात्र संपादक मंडल-
वंशिका ग्रोवर (बारहवीं ए)
सच्चित वशिष्ठ (ग्यारहवीं सी)

फ्रेंच विभाग-
श्रीमती आँचल भसीन

संस्कृत विभाग-
श्रीमती रिंपल मेदीरत्ता

तकनीकी संपादिका-
तरुणा आहूजा